

भारत के क्रांतिकारी आंदोलन की वर्तमान स्थिति—हमारे कार्यभार

प्रस्तावना

2007 की एकता कांग्रेस के पश्चात देशभर में जारी क्रांतिकारी आंदोलन के 14 वर्षीय प्रयास की समीक्षा करके हमारी केंद्रीय कमेटी (सीसी) ने दिसंबर 2020 में राजनीतिक सांगठनिक समीक्षा (पीओआर) तैयार की। पीओआर ने यह स्पष्ट किया है कि देशभर में क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी पीछेहट की स्थिति का सामना कर रहा है और इस स्थिति को पार करके क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाना ही हमारा प्रधान लक्ष्य होगा। ऐसी स्थिति जब क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी पीछेहट से गुजर रहा है, में एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित फौरी, प्रधान व केंद्रीय कार्यभार को बदल कर हमारी केंद्रीय कमेटी ने नए फौरी, प्रधान व केंद्रीय कार्यभार के अलावा राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक, संयुक्त मोर्चा, शहरी कार्यभार दिए। केंद्रीय कमेटी द्वारा बनायी गई राजनीतिक सांगठनिक समीक्षा के आधार पर विगत साढ़े तीन सालों से अस्थायी पीछेहट को पार करने के लिए हमने राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक प्रयास जारी रखे।

जब 2018 से भारत के क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी पीछेहट का सामना कर रहा है, इस स्थिति में ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी भाजपा की केंद्र व राज्य सरकारों ने 2022 तक प्रतिक्रांतिकारी समाधान हमले और 2022 के आखिरी से प्रतिक्रांतिकारी सूरजकुंड रणनीतिक योजना के तहत हमले को जारी रखा। इस रणनीतिक योजना के हिस्से के तौर पर ही जनवरी 2024 से देशव्यापी आंदोलन के समूल उन्मूलन के मकसद से 'कगार' के तहत निर्णायक युद्ध शुरू हुआ जोकि वर्तमान में जारी है। 2005 से देशभर के क्रांतिकारी आंदोलन के उन्मूलन के लिए केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रतिक्रांतिकारी युद्ध के तहत हर साल आंदोलन के क्षेत्रों में हजारों और अतिरिक्त बलों को तैनात करके कॉरपेट सेक्युरिटी व्यवस्था को विस्तारित और मजबूत करते हुए सभी क्षेत्रों में बहुआयामी हमले को तेज किया गया। सूरजकुंड रणनीतिक योजना के तहत इस हमले में मौलिक बदलाव आया है। केंद्र व राज्य सरकारों ने तब तक अपने द्वारा लगभग 2 दशकों से संचालित प्रतिक्रांतिकारी युद्ध के नतीजों का आकलन करके सभी क्षेत्रों में कमजोर हुए क्रांतिकारी आंदोलन को उबरने का मौका नहीं देते हुए उसके पूरी तरह उन्मूलन के लिए निर्णय लिया। उस निर्णय पर अमल करते हुए कगार हमले में प्लाटून, कंपनी व बटालियन की तादाद में केंद्रीकृत हमारी पार्टी व पीएलजीए बलों का उन्मूलन करने के लिए, खासकर सीसी, एसजडसी नेतृत्व के उन्मूलन के लिए बड़े पैमाने पर भाड़े के पुलिस, अर्धसैनिक व कमांडो बलों को तैनात करके हमला करने लायक हमले के स्वभाव में बदलाव आया। इसके अलावा शहरों व मैदानों में जन

संघर्षों एवं जन संगठनों पर भी केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा एनआईए आदि इंटेलिजेन्स एजेंसियों के साथ-साथ अन्य सशस्त्र बलों का इस्तेमाल करके बड़े पैमाने पर हमले किए जा रहे हैं। इससे देशभर के आंदोलनरत क्षेत्रों में हमारी पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे के राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक प्रयास में बड़े पैमाने पर बधाएं और खतरें बढ़ गए। इस स्थिति में अस्थायी पीछेहट को पार करके क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए हमारे राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक प्रयास कई सीमितताओं में कमजोर स्थिति में जारी है। इसलिए क्रांतिकारी आंदोलन की अस्थायी पीछेहट की स्थिति जारी है। इस वस्तुगत व आत्मगत स्थिति को ध्यान में रख कर विगत साढ़े तीन सालों के आंदोलन के प्रयास की समीक्षा करेंगे। क्रांति के लिए अनुकूल रही अंतर्राष्ट्रीय व देशीय वस्तुगत स्थिति का अगर सदुपयोग करना है तो विगत साढ़े तीन सालों के क्रांतिकारी प्रयास की समीक्षा करने तक ही सीमित न होकर उस समय जब क्रांतिकारी आंदोलन कठिन स्थिति में पहुंच गया, से पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे में जारी रहे खामियों, कमजोरियों व सीमितताओं की समीक्षा करके उन्हें सुधारने को अत्यंत महत्व देना चाहिए। इसीलिए इस सर्कुलर में विगत की समीक्षाओं के आधार पर लंबे समय से क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा सामना की जा रही राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक समस्याओं का भी हमने उल्लेखन किया। प्रतिक्रांतिकारी सूरजकुंड रणनीतिक योजना के तहत जारी कगार हमले के दौरान अस्थायी पीछेहट से गुजर रहा क्रांतिकारी आंदोलन तीव्र प्रतिकूलताओं का सामना कर रहा है। इस स्थिति में भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को धक्का न पहुंच जाए, इस मकसद से पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा व देशव्यापी क्रांतिकारी आंदोलन को बचाने के लिए आवश्यक राजनीतिक कार्यभारों, राजनीतिक व सैनिक दावपेंचों को बनाने की आवश्यकता सामने आयी। इस स्थिति में पीबी यह सर्कुलर पेश कर रहा है।

नोट: इस सर्कुलर में जहां राज्य कमेटी/राज्य स्तरीय कमेटी लिखी गयी, वहां यह समझना चाहिए कि स्पेशल एरिया कमेटी (एसएसी), स्पेशल जोनल कमेटी (एसजडसी) और राज्य कमेटी (एससी). वैसे ही जहां जिला कमेटी/जिला स्तरीय कमेटी लिखी गई, वहां समझना चाहिए कि जोनल कमेटी (जडसी), डिविजनल कमेटी (डीवीसी) और जिला कमेटी (डीसी), कंपनी पार्टी कमेटी (सीवाईपीसी). एरिया स्तरीय कमेटियों का अर्थ है एरिया कमेटी (एसी) और प्लटून पार्टी कमेटी (पीपीसी).

प्रिय कामरेड्स,

केंद्रीय राजनीतिक सांगठनिक समीक्षा (2020) द्वारा निर्देशित कार्यभारों के मुताबिक देशभर में विगत साढ़े तीन साल तक पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे ने अस्थायी पीछेहट से गुजर रहे क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक प्रयास किए। इस क्रम में केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा चालाए जा रहे प्रतिक्रांतिकारी युद्ध का सामना करते हुए केंद्रीय कमेटी सदस्यों से लेकर क्रांतिकारी जनता तक कुल मिला कर 683 कामरेड शहीद हुए। इनमें से 190 महिला कामरेड थीं। क्रांतिकारी आंदोलन के पुरोगमन के प्रति अटल विश्वास के साथ उनके द्वारा किया गया प्रयास हमें लगातार प्रेरणा देता है। उनके प्रयास में मौजूद नए अनुभव हमारे लिए मार्गदर्शक होंगे। शहीदों के आदर्शों से प्रेरणा लेकर क्रांतिकारी आंदोलन के पुरोगमन के लिए प्रयास करेंगे।

इस अवधि में हमारे द्वारा किए गए प्रयास (काम) के सकारात्मक पहलू

अस्थायी सेटबैक की स्थिति से क्रांतिकारी आंदोलन को उबार कर आगे बढ़ाने के लिए सैद्धांतिक, राजनीतिक व सांगठनिक रूप से पार्टी को संगठित करने को अत्यंत महत्व देकर हमारी केंद्रीय कमेटी ने 2019 में पार्टी की वर्षगांठ के संदेश में तमाम पार्टी का आह्वान किया। सभी राज्यों को एक ही बार इस आह्वान को नहीं पहुंचाने की स्थिति में, सीसी ने यह निर्देश दिया कि इस आह्वान के पहुंचने के बाद के दो वर्षों तक अपने-अपने राज्यों में इस अभियान को जारी रखना चाहिए। तब से लेकर अब तक देश के कई राज्यों में यह अभियान जारी है।

इस अभियान के दौरान सीसी की राजनीतिक सांगठनिक समीक्षा द्वारा कमजोर हुए आंदोलन की ताकत के अनुरूप केंद्रीय कार्यभार सहित अन्य फौरी कार्यभारों को बदल किए गए विषय पर स्पष्टता दी गई और अपने-अपने राज्यों के आंदोलन की स्थिति का आकलन करके नए कार्यभार बनाने का प्रयास जारी रहा। सीसी द्वारा पेश किए गए दस्तावेज — भारत देश के उत्पादन संबंधों में बदलाव—हमारा राजनीतिक कार्यक्रम, भारत देश में जाति का सवाल—हमारा दृष्टिकोण, भारत देश में राष्ट्रीयताओं का सवाल—हमारा दृष्टिकोण — जहां पहुंच गए, वहां उन पर व्यक्तिगत अध्ययन, कक्षाएं व चर्चाएं जारी हैं। इनके आधार पर बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों में वर्ग संघर्ष के संचालन के बारे में तमाम पार्टी को समझदारी देने का प्रयास जारी है।

इस अभियान के दौरान पार्टी की सदस्यता बढ़ाने का कार्यक्रम जारी है। क्रांतिकारी जरूरतों के मुताबिक ग्राम पार्टी कमेटियों, एरिया पार्टी कमेटियों से लेकर सीसी तक कुछ लोगों को पदोन्नति दी गई।

सभी आंदोलनरत क्षेत्रों में कारपेट सेक्युरिटी विस्तारित और संगठित होने की स्थिति में स्थानीय स्तर में जनता को वर्ग संघर्ष और गुरिल्ला युद्ध में नेतृत्व पहुंचाने के लिए स्थानीय पार्टी सेल्स, ग्राम पार्टी कमेटियों (जीपीसी) की कार्यशैली

में बदलाव ला रहे हैं। उनमें से पेशेवर क्रांतिकारियों (पीआर) को विकसित कर रहे हैं। स्थानीय सांगठनिक दस्ता (एलओएस) में मौजूद सीनियर पार्टी सदस्यों को पीआर के रूप में उस एरियाओं में भेज रहे हैं। एरिया कमेटी सदस्यों के नेतृत्व में 1+1, 1+2 टीमों, सिविल टीमों काम कर रही हैं। स्थानीय पार्टी सेल व जीपीसियों से विकसित हुए पीआर कामरेडों के साथ सब एरिया कमेटी का निर्माण शुरू हुआ। हालांकि ये अनुभव ज्यादातर डीके संबंधित हैं, लेकिन एओबी, तेलंगाना आदि राज्यों में भी ये अनुभव आ रहे हैं।

देशभर के ऐसे सभी जंगली, मैदानी, शहरी क्षेत्रों जहां पार्टी की इकाइयां मौजूद हैं और जनसंगठन मौजूद हैं, में साम्राज्यवादी, दलाल नौकरशाही व सामंतवादी वर्गों के शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ प्रचार व आंदोलन कार्यक्रम जारी हैं। विभिन्न स्तरों में व्यापक जनता की दैनंदिन व मूलभूत समस्याओं को लेकर खुले व कानूनी संघर्षों व निर्माणों का इस्तेमाल करते हुए लोगों को जन आंदोलनों में एकत्रित करने का प्रयास (काम) जारी है। वन क्षेत्रों में साम्राज्यवादी, सीबीबी, समांतवादी विरोधी, कार्पोरेटीकरण व सैन्यकरण विरोधी संघर्षों में जनाधार पर आधार होकर हजारों लोगों को एकत्रित करने का प्रयास जारी है। ब्राह्मणीय हिंदुत्व आरएसएस-भाजपाई फासीवाद के खिलाफ प्रचार व आंदोलन कार्यक्रम जारी है। मित्र शक्तियों के साथ मिल कर संयुक्त मोर्चे के तहत विभिन्न मंचों का गठन के लिए प्रयास जारी है।

केंद्र व राज्य सरकारें जंगली, मैदानी व शहरी क्षेत्रों में हमारी पार्टी, पीएलजीए व जन संगठनों पर लगातार प्रतिक्रांतिकारी हमलें करने और हमें अलग-थलग करके धक्का पहुंचाने के लिए लगातार कोशिशें करने के बावजूद इस अवधि में हमारे द्वारा किए गए प्रचार-आंदोलन व संघर्ष और मित्र शक्तियों को मिलाकर संयुक्त मोर्चे द्वारा किया गया प्रयास दुश्मन के हमले को विफल करने और क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए एक मजबूत नींव के रूप में खड़ा होगा।

इस समय में केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रतिक्रांतिकारी युद्ध को विफल करने और हराने के मकसद से हमारे पीएलजीए बलों ने गुरिल्लायुद्ध के दावपेंचों का इस्तेमाल करके दुश्मन के सशस्त्र बलों पर डेलिबरेट (योजनाबद्ध) एंबुशों, आपर्युनिटी (मौका परस्त) एंबुशों, स्नाईपर कार्यवाहियों, बूबीट्रैप-रिमोट कार्यवाहियों, साबोटेज कार्यवाहियों, मुखबिरों के उन्मूलनों, जन दुश्मन - हिंदुत्व, बुर्जुआ राजनीतिक नेताओं के उन्मूलन, पुलिस कैपों पर इंप्रूवाइज्ड आर्टिलरी से शेल्लिंग करने, स्पाइक होल्स बनाने, दुश्मन के हवाई हमले को विफल करने आदि कार्यवाहियों को अंजाम देकर आंदोलन के क्षेत्रों में यथासंभव गुरिल्ला युद्ध को जारी रखा। इस अवधि में हमने 669 गुरिल्ला कार्यवाहियों को अंजाम दिया। इनमें पुलिस के 261 बलों का उन्मूलन किया गया। 516 बलों को घायल किया गया। दुश्मन से 25 हथियार जब्त किए गए।

जनता और जनमिलिशिया की सक्रिय भागीदारी से दंडकारण्य (डीके), बिहार—झारखंड (बी—जे), पूर्वी बिहार—पूर्वोत्तर झारखंड (पूर्बि—पूझा) में हमारी ताकत के अनुरूप गुरिल्ला युद्ध जारी है। ओडिशा (ओएस), महाराष्ट्र—मध्यप्रदेश—छत्तीसगढ़ (एमएमसी) में गुरिल्ला युद्ध की छिटफुट घटनाएं हो रही हैं।

जब केंद्र व राज्य सरकारें हमारी सिविल व मिलिटरी आपूर्तियों और आर्थिक स्रोतों को रोक कर क्रांतिकारी आंदोलन के उन्मूलन के लिए आतुर हैं, तब हम उसके दुष्ट लक्ष्य को पूरा नहीं होने देते हुए युद्ध को लंबा खींच रहे हैं। जनता पर आधार होकर सिविल, मिलिटरी आपूर्तियों व आर्थिक स्रोतों को इकट्ठा करते हुए गुरिल्ला युद्ध को जारी कर रहे हैं। कारपेट सेक्युरिटी के बीच में गुरिल्ला युद्ध को जारी रखने के दावपेंचों को विकसित कर रहे हैं। केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा संचालित 'कगार' हमले को विफल करने और हराने के लिए ये सकारात्मक विषय आधार के रूप में बने रहेंगे।

इस अवधि में हमारे प्रयास में मौजूद नकारात्मक पहलू

जनवरी 2021 से अब तक पार्टी के नेतृत्व को बड़े नुकसान हुए। अस्वस्थता के चलते केंद्रीय कमेटी के चार सदस्य कामरेड्स लख्मू अंबर, साकेत और आनंद शहीद हुए। जबकि दुश्मन के हमले में केंद्रीय कमेटी के सदस्य कामरेड दीपक की शहादत हुई। केंद्रीय कमेटी के 9 सदस्य (कामरेड्स किशन, शीला, कंचन, कृष्णामूर्ति, मंगतू, जस्पल, मोहित, जनार्दन और किशोर) गिरफ्तार हुए। हमारी पार्टी की लाइन पर हमला करते हुए, पार्टी के व्यवहार पर दुष्प्रचार करते हुए, पार्टी के विघटनकारी बन गए केंद्रीय कमेटी सदस्य कोबाड घेंडी व बच्चाप्रसाद सिंह का पार्टी से बहिष्कार किया गया। फिलवक्त पूर्वी रीजियन में लोग और मध्य रीजियन में लोग ही बच गए। इससे उत्तर व दक्षिण रीजियनों को प्रत्यक्ष रूप से सीसी का मार्गदर्शन नहीं पहुंचने की स्थिति, पूर्वी व मध्य रीजियनों के बीच में ताल—मेल नहीं होने की स्थिति और देशव्यापी क्रांतिकारी आंदोलन को ताल—मेल के साथ संचालित नहीं करने की स्थिति उत्पन्न हुई।

इस अवधि में अस्वस्थता के चलते व दुश्मन के हमलों में राज्य कमेटी के 9 सदस्य (कामरेड्स पवन, नर्मदा, रूपेश, गौतम पाशवान, अजित उराव, चंडी सरकार, संजय गंझू, एलएसएन मूर्ति व दामा) शहीद हुए। 11 कामरेड्स (एओबी में महेंदर, डीके में वेंगु, बीजे, पूर्वी बिहार—पूर्वोत्तर झारखंड में अजय कान्हू, प्रद्युम्ना शर्मा, संदीप, सुनील, जया और एक कामरेड, पश्चिम बंगाल में मुक्ति और अन्य कामरेड, केरल में संतोष और रफी) गिरफ्तार हुए। चार लोगों (एओबी में कृष्णा, डीके में गिरिधर, बीजे, पूर्वी बिहार—पूर्वोत्तर झारखंड में दो लोग) ने आत्मसमर्पण किया। इस अवधि में जिला कमेटी सदस्य, एरिया कमेटी सदस्य, जीपीसी सदस्य व स्थानीय पार्टी के सेल सदस्य उल्लेखनीय तादाद में शहीद हुए, गिरफ्तार हुए और सरेंडर किए। इन सभी कारणों के चलते केंद्रीय कमेटी से लेकर एरिया स्तर तक,

जीपीसी-पार्टी सेल्स तक पार्टी कमेटियां संख्यात्मक और ताकत-क्षमता के हिसाब से तुलनात्मक रूप से कमजोर हुई हैं।

विगत साढ़े तीन सालों से केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रतिक्रांतिकारी हमले में नुकसानों से बचने लायक पार्टी व पीएलजीए बल अपनी कार्यशैली में बदलाव नहीं ला पाए। नतीजतन इस अवधि में दुश्मन के हमलों में हमारे पार्टी व पीएलजीए बल तुलनात्मक रूप से अधिक तादाद में नुकसान हुए। युद्ध में यथा संभव आत्मगत ताकतों को बचाना और दुश्मन बलों का उन्मूलन करना युद्ध संचालन का सही तरीका होगा। इसके विपरीत इस साढ़े तीन वर्षों की अवधि में दुश्मन के हमलों (मुठभेड़ों, झूठी मुठभेड़ों) में हमने 439 आत्मगत ताकतों (इनमें से सीसी के एक सदस्य, एसएसी/एसजडसी के तीन सदस्य, आरसी के एक सदस्य, जडसी/डीवीसी के 33 सदस्य) और 215 हथियारों को खोया। इस समय में देशभर में जारी खुले जन संघर्षों को अस्थायी पीछेहट को पार करने के लिए अच्छे स्रोत के रूप में इस्तेमाल करने में पर्याप्त नतीजें हासिल नहीं कर पाए। डीके में विगत 4 सालों से जारी साम्राज्यवादी, सीबीबी, सामंतवादी विरोधी संघर्षों और कॉर्पोरेटीकरण व सैन्यकरण विरोधी संघर्षों का इस्तेमाल करके पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे को संगठित करने के लिए सीसी व एसजडसी के सभी सदस्यों ने केंद्रीकरण करके एक अभियान के तौर पर प्रयास नहीं किया। विभिन्न स्तरों में इन दोनों खामियां व कमजोरियां देशभर में जारी रहीं। ये दोनों इस अवधि के प्रधान नकारात्मक विषय हैं। इनके अलावा लंबे समय से क्रांतिकारी आंदोलन में जारी कमजोरियों को बताएंगे। इनमें बदलाव लाने से ही तुलनात्मक रूप से लंबा समय लगने के बावजूद क्रांति के लिए अनुकूल बन रही वस्तुगत स्थिति का सदुपयोग करके अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार कर सकेंगे।

क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा सामना की जा रही राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक समस्याएं

दिसंबर 2020 में जब सीसी ने केंद्रीय पीओआर को पेश किया तभी यह अंदाजा लगाया गया कि अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार करने के लिए तुलनात्मक रूप से ज्यादा ही समय लगेगा। केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रतिक्रांतिकारी युद्ध के चलते हमारा राजनीतिक व सैनिक प्रयास इन साढ़े तीन वर्षों के अवधि में तीव्र अड़चनों व खतरों का सामना करते हुए सीमित और कमजोर रूप से चला है। इसलिए क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी पीछेहट की स्थिति में ही जारी है। इसके कारण हैं आत्मगत प्रयास में जारी खामियां, कमजोरियां व सीमितताएं और दुश्मन का प्रतिक्रांतिकारी हमला। इन्हीं कारणों से ही 2012 तक क्रांतिकारी आंदोलन कठिन स्थिति में और 2018 तक अस्थायी पीछेहट की स्थिति में धकेल दिया गया।

विगत साढ़े तीन सालों में दुश्मन के हमले में हमारी पार्टी, पीएलजीए व

संयुक्त मोर्चा मात्रात्मक और गुणात्मक रूप से उल्लेखनीय तौर पर कमजोर हुए। इस स्थिति में सीसी व राज्य कमेटियों ने हालांकि आवश्यक पालिसियां (नीतियां) व प्रस्ताव बनाए और सही समय पर देशव्यापी पार्टी कतारों को पहुंचाए, लेकिन विभिन्न स्तरीय नेतृत्व कामरेडों की शहादतों व गिरफ्तारियों के चलते, जनाधार कमजोर होने के चलते, बदलती परिस्थिति के अनुरूप आवश्यक दावपेंचों को बनाने में कमजोरी के चलते उन प्रस्तावों का अपने क्षेत्रों की आंदोलन की स्थिति के अनुरूप अनुप्रयोग करने में कमी व कमजोरी जारी है। देशभर में सभी क्षेत्रों में ऐसी स्थिति बन गई कि हम सीमित रूप से ही काम कर सकते हैं। क्रांतिकारी आंदोलन कमजोर होने की स्थिति में 2020 की केंद्रीय पीओआर द्वारा निर्देशित कार्यभारों को हासिल नहीं कर सकने वाली स्थिति बन गई। पर यहां यह समझने की जरूरत है कि निम्नांकित खामियां, कमजोरियां व कमियां तुलनात्मक हैं।

दिसंबर 2020 की राजनीतिक व सांगठनिक समीक्षा में अस्थायी पीछेहट की स्थिति से गुजर रहे क्रांतिकारी आंदोलन की स्थिति को पार करने के लिए यह बताया गया “पार्टी की सैद्धांतिक व राजनीतिक बुनियाद को प्रगाढ़ बनाते हुए उसे निर्माणात्मक रूप से संगठित करना; जनाधार को व्यापक बनाने के लिए वर्ग संघर्ष को तेज करना; पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे को संगठित करना; नेतृत्व, कतारों व पीएलजीए बलों को बचाना, शक्ति के अनुरूप गुरिल्ला युद्ध को जारी रखना, यह वर्तमान में हमारे कार्याचरण की दिशा होगी। विगत के साढ़े तीन सालों की अवधि में इस दिशा में हमारा कार्याचरण कमजोर रहा था।

हमारे देश की अर्द्ध औपनिवेशिक-अर्द्ध सामंती सामाजिक व्यवस्था में विगत साढ़े सात दशकों की अवधि में उल्लेखनीय बदलाव होने के बावजूद यह व्यवस्था मौलिक रूप से नहीं बदल गई, इस विषय को ‘भारत देश के उत्पादन संबंधों में बदलाव-हमारा राजनीतिक कार्यक्रम’ दस्तावेज में हमने निर्धारित किया। हालांकि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक पहलुओं के साथ-साथ टेरेन में आए बदलावों, अंदरूनी, देहाती क्षेत्रों में बढ़ने वाले राज्ययंत्र की पकड़ और उसके विस्तार को नजर में रख कर हमारे देश का 7 तरह वर्गीकरण किया गया। वर्तमान में बदली हुई सामाजिक परिस्थिति में वर्ग संघर्ष को संचालित करने के लिए हर राज्य जहां पार्टी यूनिट मौजूद हैं, में एमओपी दस्तावेज पर आधार होकर क्षेत्रों का वर्गीकरण करके, उन क्षेत्रों के अनुरूप वर्ग संघर्ष के कार्यक्रम की रूपरेखा देकर, पार्टी कतारों, जनसंगठनों के सदस्यों को स्पष्टता देने का प्रयास अभी-अभी शुरू हुआ। सामाजिक बदलाव के हिस्से के तौर पर सामाजिक तबकों द्वारा उनकी आशाओं व आकांक्षाओं की पूर्ति करने देशभर में स्वतःस्फूर्तता पूर्वक संघर्ष किए जा रहे हैं। चूंकि इन तबकों द्वारा जनवादी व जायज मांगें उठायी जा रही हैं, इसलिए हमने निर्णय लिया है कि वर्ग संघर्ष के हिस्से के तौर पर ऐसी सामाजिक समस्याओं पर संघर्षों का निर्माण करना चाहिए। जाति और राष्ट्रीयता सवाल पर संचालित संघर्ष कार्यक्रम के बारे में हमने दस्तावेज पेश किए। हमने पीओआर में

लिखा है कि देशभर में आंशिक समस्याओं व राजनीतिक समस्याओं को लेकर स्पाटेनियस रूप (स्वतःस्फूर्तता) से उभरने वाले जन संघर्षों पर हमारी पार्टी जहां का तहां सभी स्तरों में पहलकदमी के साथ प्रतिक्रिया दिखाते हुए उन्हें संगठित संघर्षों के रूप में विकसित करने के लिए प्रयास करना होगा। खुले, गुप्त, कानूनी व गैर कानूनी संघर्षों को समन्वय करके वर्ग संघर्ष को संचालित करना होगा। पार्टी के दस्तावेजों (सीसी पीओआर, एमओपी, जाति समस्या, राष्ट्रीयता समस्या) का अध्ययन, चर्चाओं और उनके ऊपर आधार होकर विभिन्न राज्यों के आंदोलन के स्तर/ताकत पर आधार होकर वर्ग संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए सीमित प्रयास चल रहा है। विभिन्न राज्यों की सामाजिक परिस्थितियों के अध्ययन के लिए, खुले-गुप्त, कानूनी-गैर कानूनी संघर्षों के संचालन के लिए संविधान व कानूनों का अध्ययन करके पार्टी व जन संगठनों के कार्यकर्ताओं को स्पष्टता देने और उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए केंद्र, राज्य व जिला कमेटियों द्वारा जो राजनीतिक व सांगठनिक प्रयास जारी है वह कमजोर स्थिति में है।

देश में साम्राज्यवादी वैश्वीकरण शुरू होने के बाद से दलितों, आदिवासियों और महिलाओं द्वारा उनके तबकाई समस्याओं के हल के लिए स्वतःस्फूर्त संघर्ष किए जा रहे हैं। ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी भाजपा के केंद्र में सत्तारूढ़ होने के बाद इन तबकों के अलावा धार्मिक अल्पसंख्यक लोग विभिन्न रूपों में संघर्ष कर रहे हैं। इन सभी संघर्ष वर्ग संघर्ष का हिस्सा ही है। देशभर में पार्टी कमजोर होने की वजह से अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार करने के लिए इन संघर्षों का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं। पोस्ट माडर्निज्म और आंबेडकरिज्म इन संघर्षों को सैद्धांतिक मार्गदर्शन दे रहे हैं। इनमें से ज्यादातर संघर्षों को साम्राज्यवाद व सीबीबी द्वारा प्रायोजित गैर सरकारी संस्थाएं (एनजीओ) और कुछ जगहों में सामाजिक संस्थाएं, संशोधनवादी व बुर्जुआ पार्टियां नेतृत्व दे रही हैं। नतीजतन ये सभी संघर्ष कानूनीवाद, संशोधनवाद व आर्थिकवाद का शिकार हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में सैद्धांतिक रूप से पोस्टमाडर्निज्म का भंडाफोड़ करने में, आंबेडकरिज्म की कमी के बारे में मित्रतापूर्वक समझाने में, जनता के जुझारूपन को योजनाबद्ध तरीके से कमजोर करने वाली एनजीओं के षड़यंत्रों का पर्दाफाश करने में, जनता में पनपने वाले कानूनीवाद, संशोधनवाद व आर्थिकवाद के खिलाफ सैद्धांतिक व राजनीतिक प्रयास करने में हमारी तरफ से पर्याप्त कोशिश नहीं चल रही है।

ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद के खिलाफ लगातार वैचारिक/सैद्धांतिक, राजनीतिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में वर्ग संघर्ष चलाने के अलावा उसके द्वारा दलितों, आदिवासियों, महिलाओं, धार्मिक अल्पसंख्यकों, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के ऊपर जारी हमलों के खिलाफ उन तबकों को संगठित करके उन्हें प्रतिरोध के लिए तैयार नहीं कर पा रहे हैं। राजनीतिक संघर्ष के प्रयास में यह हमारी कमी है।

दलित, आदिवासी व पिछड़े तबकों के उल्लेखनीय हिस्सा का विश्वास है कि आंबेडकरिज्म उनकी समस्याओं का हल करने वाला सिद्धांत है और संविधान उनके

फायदे को बचाता है। इन तबकों से ताल्लुक रखने वाले कुछ बुद्धिजीवियों व माकपा द्वारा मार्क्सवाद और आंबेडकरवाद को मिला कर लाल-नील झंडों के सिद्धांत को आगे लाया गया/लाया जा रहा है। इनके खामियों की ओर सभी का ध्यान आकर्षित करने लायक सैद्धांतिक व राजनीतिक रूप से आलोचना पेश करने के साथ-साथ उनसे प्रभावित लोगों को समझाने की दिशा में हमारा सैद्धांतिक व राजनीतिक प्रयास नहीं चल रहा है।

2020 में केंद्र सरकार द्वारा लाए गए तीन किसान विरोधी कानूनों के खिलाफ देशभर के किसान, विशेष कर उत्तर भारत के किसानों द्वारा एक वर्ष तक जारी संघर्ष का हालांकि हमने समर्थन किया और उसमें भाग लिया, लेकिन उस संघर्ष में आगे आयी ताकतों पर आधार होकर उस रीजियन की पार्टी में नयी ताकतों को एकत्रित करने में हम पीछे रह गए। असोम, बंगाल और उत्तर भारत में एनआरसी, सीएए के खिलाफ संचालित आंदोलनों में हालांकि हमने भाग लिया लेकिन सीमित रूप से ही नयी ताकतों को पार्टी में एकत्रित किया। डीके में विगत 4 सालों से जन आंदोलनों में हजारों जनता शामिल हो रही है। लेकिन उस पर आधार होकर सीमित रूप से ही पार्टी को संगठित किया गया। उत्तर भारत के किसान संघर्ष पर आधार होकर सीमित रूप से ही पार्टी को संगठित किया गया। पृथक तेलंगाना आंदोलन के दूसरे चरण के आंदोलन के दौरान पार्टी को बहुत कम स्तर में संगठित किया गया।

एक शब्द में बताना है तो कानूनी संघर्षों में शामिल ताकतों से पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे को मजबूत (संगठित) करने की दिशा में हमारा राजनीतिक व सांगठनिक प्रयास कमजोर रूप से चल रहा है।

कानूनी व खुले संघर्षों में शामिल होते हुए ही उनकी सीमितताओं के बारे में लोगों में विस्तार रूप से प्रचार करने, उन्हें जुझारू संघर्षों के लिए तैयार करने, पीएलजीए में भर्ती करके जनयुद्ध के लिए तैयार करने की दिशा में हमारा राजनीतिक व सांगठनिक प्रयास कमजोर रूप से जारी है। वन क्षेत्रों से प्राकृतिक संसाधनों की लूट करने वाले सीबीबी को टारगेट करते हुए नारें बनाने में, उन संघर्षों को सीबीबी, साम्राज्यवादी और केंद्र व राज्य सरकारों के विरोधी संघर्षों के रूप में विकसित करने की दिशा में हमारा राजनीतिक प्रयास कमजोर स्थिति में है।

वर्तमान में डीके सहित देशभर में स्थानीय स्तर में वर्ग संघर्ष कमजोर स्थिति में है। स्थानीय स्तर में पुरानी व नयी भूस्वामी लुटेरी ताकतों, दुष्ट मुखियाओं, जन विरोधी कबीलाई मुखियाओं, अन्य लुटेरी ताकतों के खिलाफ वर्ग संघर्ष कमजोर रूप से चल रहा है। जनता के दैनंदिन समस्याओं को लेकर संघर्ष कम हो गए। दूसरी ओर डीके में 40 सालों के वर्ग संघर्ष के फलस्वरूप स्थानीय निर्माणों के नेतृत्व के एक तबके की वर्ग बुनियाद बदल गई। ये लोग ही अभी तक स्थानीय निर्माणों के नेतृत्व में बने रहने के चलते वे स्थानीय लुटेरी ताकतों से वर्ग समझौतापूर्वक तरीकों को अपना रहे हैं। यह जनाधार कमजोर होने का मुख्य कारण है।

तेलंगाना, एपी राज्यों में कार्यरत खुले जन संगठन और पार्टी सदस्य लंबे समय से प्रधान रूप से प्रचार व आंदोलन कार्यक्रमों तक ही सीमित हुए. हमारी राजनीतिक लाइन के मुताबिक जनयुद्ध को आगे बढ़ाने में मददगार होने की दिशा में खुले व लीगल जन संगठनों और जन संघर्षों का राजनीतिक व सांगठनिक प्रयास होना चाहिए. लेकिन ये इस लाइन से डीवियेट हो (हट) रहे हैं. उन्हें पार्टी की कैंडर पालिसी के अनुरूप संगठित नहीं करना हमारी पार्टी की ओर से हुई बड़ी गलती है. नतीजतन शहरों व मैदानों में खुले जन आंदोलन और गुप्त आंदोलन को विकसित करने में सहयोग देने लायक, उन्हें सशस्त्र संघर्ष से जोड़कर उसे प्रधान संघर्ष के रूप में विकसित करने में सहयोग देने लायक हमारा राजनीतिक व सांगठनिक प्रयास पर्याप्त रूप से नहीं चल रहा है. इससे जनयुद्ध के ऊपर केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रतिघातक युद्ध के खिलाफ मजबूत व व्यापक जन आंदोलन का निर्माण नहीं कर पा रहे हैं.

इस राजनीतिक कमजोरी के फलस्वरूप जन संगठनों, जन आंदोलनों में राजनीतिक रूप से कानूनीवाद, आर्थिकवाद, संशोधनवाद सामने आए. कुछ लोगों में पोस्ट माडर्निस्ट विचार बढ़ गए. सांगठनिक हिसाब से व्यक्तिवाद, केरीरिज्म, नौकरशाही, अनेकता/गुटबाजी बढ़ गई. कुछ लोग आर्थिक भ्रष्टाचार का शिकार हुए. विभिन्न स्तरों में यह कमजोरी देशभर में जारी है. इस राजनीतिक कमजोरी को सुधारने के लिए पार्टी द्वारा किये गये प्रयास में कमी और कमजोरी है.

देशभर में शहरों, मैदानी क्षेत्रों, लाल प्रतिरोध क्षेत्रों, गुरिल्ला जोंनों में गैर कानूनी व गुप्त संघर्ष-निर्माण रूपों को कानूनी व खुले संघर्ष-निर्माण रूपों के साथ ताल-मेल नहीं करने के रूप में, उन पर ध्यान नहीं देने के रूप में संकीर्णतावाद जारी है. स्थानीय स्तर से लेकर जिला स्तर तक साम्राज्यवाद, सीबीबी, सामंतवाद के खिलाफ संयुक्त मोर्चा में मित्र शक्तियों को मिला कर व्यापक जन आंदोलनों का निर्माण करने में लापरवाही, उदारतावाद व संकीर्णतावाद मजबूती रुझानों के रूप में मौजूद हैं. नतीजतन रणनीतिक क्षेत्रों में जारी जनयुद्ध के अलग-थलग होने की स्थिति सामने आयी.

शहरी, मैदानी व जंगली क्षेत्रों में आंदोलनों को एक दूसरे के पूरक के रूप में संचालित करने में, किसानों-गैर किसानों, आदिवासी-गैर आदिवासी जनता को एकत्रित व संगठित करके वर्ग संघर्ष को संचालित करने में पर्याप्त विकास नहीं है.

हमारी राजनीतिक व सैनिक लाइन/हमारी साधारण लाइन के आधार पर शहरों, मैदानों व वन क्षेत्रों में व्यापक जनता को क्रांतिकारी आंदोलन में एकजुट करने वाले राजनीतिक प्रयास को कई सालों पहले ही बहुत सी जगहों में धक्का लगा. जबकि यह प्रयास बाकी क्षेत्रों में खासकर वन क्षेत्रों में बहुत से सालों से कमजोर स्थिति में जारी है. हमारी राजनीतिक लाइन के अनुसार क्रांतिकारी आंदोलन की शुरुआत से लेकर जीत हासिल करने तक आंदोलन की ताकत और कमजोरियों में आने वाले बदलावों को ध्यान में रखते हुए ही साम्राज्यवाद, सीबीबी

व सामंतवाद जो हमारे टारगेट हैं, के खिलाफ मजदूर, किसान, मध्यम वर्ग (पेटी बुर्जुआ — निम्न पूंजीपति) और राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्गों को क्रांतिकारी आंदोलन में एकजुट व संगठित करके सशस्त्र करना होगा. गुप्त पार्टी की कार्यशैली व सांगठनिक प्रयास में जारी खामियों व कमजोरियों के फलस्वरूप दुश्मन के हमलों में शहरों व मैदानों में हमारी पार्टी को नुकसान होने के बावजूद चेतनाबद्ध व दीर्घकालीन दृष्टिकोण से कमियों को पहचान करके सुधारते हुए आंदोलन की ताकत व कमजोरियों में आने वाले बदलावों के अनुरूप संघर्ष व निर्माण रूपों को चयनित करके मजदूर, किसान, मध्यम वर्ग व राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग को एकजुट व संगठित करने के लिए दृढसंकल्प के साथ प्रयास नहीं कर पा रहे हैं. जब तक क्रांतिकारी आंदोलन एक मजबूत ताकत के रूप में नहीं उभरता है, तब तक उसमें राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग का शामिल होना भले ही संभव नहीं हो, लेकिन बाकी तीनों वर्गों को भी एकजुट करने के लिए हम आवश्यक दावपेंच व कामकाज के तरीकें बना कर, प्रयास नहीं कर पाए. नतीजतन पार्टी, जनसेना व संयुक्त मोर्चा पर्याप्त रूप से मजबूत नहीं हुए. पार्टी, पीएलजीए की वर्गीय संरचना में आवश्यक बदलाव नहीं आए. पीएलजीए को सैद्धांतिक नेतृत्व देने लायक मजदूर, छात्र व बुद्धिजीवी तबकों से पार्टी की ताकतें उसमें शामिल नहीं हुई हैं. जनयुद्ध के लिए आवश्यक सैनिक संसाधन व प्रौद्योगिकी (टेकनालजी) नहीं पहुंच रही है. यह हमारी राजनीतिक कमजोरी है.

‘जनाधार को बढ़ाते हुए दुश्मन के लिए अभेद्य व मजबूत गुप्त पार्टी का निर्माण करते हुए, पीएलजीए व जन संगठनों—संयुक्त मोर्चे को मजबूत व विकसित करते हुए जन संघर्षों और गुरिल्ला युद्ध को विस्तृत व तेज करेंगे’ — इस कार्यभार को पूरा करने के लिए किया गया हमारा प्रयास कई जगहों में कमी व कमजोरपूर्वक था. लुटेरे वर्गों को सत्ता से उखाड़ फेंक कर राज्य सत्ता पर कब्जा हासिल करने तक मजदूर वर्गीय पार्टी को क्रांतिकारी आंदोलन के शुरुआती दिनों से लेकर जीत हासिल करने तक गुप्त रूप से, दुश्मन के लिए अभेद्य रूप से रहना चाहिए. इस मौलिक नियम के बारे में हमारी राजनीतिक लाइन दशकों से स्पष्ट रूप से बता रही है और पार्टी के साहित्य में इस विषय के बारे में हम लिख रहे हैं. लेकिन व्यवहार में दुश्मन के लिए अभेद्य व गुप्त रूप पार्टी और जनता के साथ जीवंत संबंध रखने वाली पार्टी के निर्माण में हमारी विफलताएं तीव्र रूप में जारी हैं. लंबे समय से हमारा व्यवहार गुप्त पार्टी की अवधारणा के विपरीत जारी है. सर्वहारा वर्गीय पार्टी/कम्युनिस्ट पार्टी की समझदारी है कि पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे को मजबूत करने में मददगार होने की दिशा में जन संघर्षों/वर्ग संघर्षों को संचालित करना होगा. इस समझदारी से मेल नहीं खाने वाली पेटी बुर्जुआ समझदारी व व्यवहार हमारी पार्टी में जारी रहने का नतीजा है यह कमजोरी. इसी वजह से ही दीर्घदृष्टि के साथ कानूनी—गैरकानूनी समन्वय तंत्र, कोरियंग व्यवस्था, लैजान पोस्टों का इंतजाम नहीं कर पा रहे हैं. दरअसल व्यवहार में गुप्त पार्टी के निर्माण के लिए

हमने उचित तरीकों नहीं बनाए. इस वजह से तात्कालिक पद्धतियों पर अमल करते आ रहे हैं. इस उदारतावाद कामकाज के फलस्वरूप 2007–2024 के बीच में दुश्मन के हमलों में केंद्र व राज्य कमेटियों के सदस्यों व कतारों को हमने खो दिया. दुश्मन के लिए अभेद्य व गुप्त पार्टी के निर्माण के लिए लगातार दृढ़संकल्प के साथ काम नहीं करने की वजह से अब ऐसी स्थिति बन गई है कि शहरी, मैदानी व वन क्षेत्रों में जनता के बीच में रहने वाली पार्टी, जनता के साथ जीवंत संबंध रखने वाली पार्टी व उन क्षेत्रों जहां कॉरपेट सेक्युरिटी मजबूत हुई है, स्थानीय स्तर में जनता को वर्ग संघर्ष और गुरिल्ला युद्ध में नेतृत्व देने वाली पार्टी कमजोर स्थिति में है.

आधार इलाका निर्माण के कार्यभार को लेकर काम करने वाले डीके और बी-जे (2014 से अस्तित्व में आये पूर्वी बिहार-पूर्वोत्तर झारखंड को मिला कर) में गैर किसान व गैर आदिवासी व्यापक जनता को ऑर्गनाइज करने के लिए हालांकि योजना बनायी गई है लेकिन उसके अमल के लिए दृढ़तापूर्वक काम नहीं किया गया. इसके चलते उन क्षेत्रों के लिए निर्देशित उच्च कार्यभारों की पूर्ति करने लायक पार्टी, पीएलजीए की वर्गीय संरचना में बदलाव नहीं ला पाए. ये क्षेत्र अस्थायी पीछेहट की स्थिति का शिकार होने में यह राजनीतिक कमजोरी मुख्य वजह बन गयी.

विगत कुछ अरसे से पार्टी सदस्यता की योग्यताओं और पदोन्नति की योग्यताओं का सटीक पालन नहीं करने की वजह से हालांकि पार्टी सदस्यता बढ़ गई और कुछ लोग विभिन्न स्तरों में प्रमोट हुए हैं, लेकिन आंदोलन की समस्याओं का हल करने में पार्टी की ताकत और क्षमताएं तुलनात्मक रूप से कम हैं.

हमारी पार्टी में बुर्जुआ, पेटी बुर्जुआ, किसान वर्गीय सोच-विचार, राय व आदतें तुलनात्मक रूप से मजबूती से मौजूद हैं. इन विचारों का पीछा करते हुए गलत व्यवहार जारी है. इससे राजनीतिक रूप से गलत विचार व रुझान पैदा हो रहे हैं. सांगठनिक क्षेत्र में यह रुझान कई बार तमाम क्रांतिकारी शिविर और तमाम पार्टी की कतारों के विचारों को सुनने व संग्रहित करने पर ध्यान नहीं देने के रूप में, उनमें से अच्छे-बुरों का विश्लेषण व संश्लेषण करने वाली जनदिशा से दूर होने के रूप में जारी है. नतीजतन आंदोलन की समस्याओं के परिष्कार में तमाम क्रांतिकारी शिविर का सामूहिक ज्ञान और उसके विचार केंद्रीकृत नहीं हो रहे हैं. इसके फलस्वरूप जनवादी रहित केंद्रीयता, यानी नौकरशाही का शिकार होना पड़ रहा है. और कई बार यह अतिजनवाद के रूप में सामने आ रहा है. नीचे से ऊपर तक होने वाली पार्टी, पीएलजीए, कमेटियों, कमांडों व यूनिटों की बैठकों में पर्याप्त तैयारी के बिना शामिल होकर कई दिनों तक एजेंडे के विषयों पर राय बताने के बावजूद ज्यादातर प्रस्ताव एकमत के साथ करने के बावजूद, प्लीनमों व विशेष बैठकों में विस्तार रूप से चर्चा करके एकमत व बहुमत पर प्रस्ताव करने के बावजूद व्यवहार में उन पर अमल करने में स्वतःस्फूर्तता, पहलीकदमी की कमी,

निर्णयात्मकता की कमी, व्यक्तिवाद और प्रस्तावों के अमल में अच्छे-बुरों की जिम्मेदारी नहीं लेने के रूप में अतिजनवाद व्यक्त हो रहा है। नतीजतन व्यवहार के साथ सिद्धांत, मौलिक लाइन व नीतियों को जोड़ने में विफल हो रहे हैं। इस विफलता से अनुभववाद पैदा हो रहा है। वर्ग संघर्ष—गुरिल्ला युद्ध के संचालन के काम में पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे के निर्माण व संगठनीकरण के लिए जारी राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक कामकाज में शहरी, मैदानी और वन क्षेत्रों के आंदोलनों को निर्मित व विकसित करने वाले कामकाज में पार्टी नेतृत्व श्रेणियों की भागीदारी कम होने के साथ-साथ उनमें पैदा होने वाली राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक समस्याओं के हल के लिए आवश्यक दावपेंचों को नहीं बना कर साधारण सिद्धांत, लाइन व नीतियों को रटने के रूप में कठमुल्लावाद पैदा हो रहा है।

अनुभववादी व कठमुल्लावादी मनोगतवाद के फलस्वरूप सिद्धांत, मौलिक लाइन व नीतियों को व्यवहार के साथ जोड़ने में कमी सामने आ रही है। इससे हालांकि वर्ग संघर्ष—गुरिल्ला युद्ध के व्यवहार द्वारा सामने आने वाले सकारात्मक व नकारात्मक अनुभवों का विश्लेषण कर रहे हैं, लेकिन सकारात्मक अनुभवों का संश्लेषण करके साधारणीकरण करने में कमजोरी जारी है।

महाराष्ट्र, तमिलनाडू, कर्नाटक, केरल व उत्तर रीजियन के राज्यों के पार्टी सदस्यों के एक हिस्से में ये गलत विचार मौजूद हैं कि पार्टी गुप्त रूप से रहने से वर्ग संघर्ष में व्यापक जनता को एकजुट नहीं कर सकते हैं। इससे वे भूमिगत जिंदगी के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं। जिन क्षेत्रों का वे नेतृत्व कर रहे हैं, उन क्षेत्रों में दुश्मन के लिए अभेद्य व गुप्त पार्टी का निर्माण नहीं कर पा रहे हैं। पार्टी गुप्त रूप से रहते हुए व्यापक जनता को वर्ग संघर्ष में एकजुट करने वाले कामकाज में प्रशिक्षित नहीं हो रहे हैं। इससे उन क्षेत्रों में गुप्त पार्टी का निर्माण नहीं हो रहा है। ताकतवर वर्ग संघर्ष विकसित नहीं हो रहा है। छत्तीसगढ़ में गुप्त पार्टी निर्माण के बारे में सटीक रूप से नहीं समझने की वजह से व्यापक जनता को वर्ग संघर्ष में गोलबंद करने के प्रयास को महत्व नहीं देते हुए गुप्त रूप से रहने की वजह से वहां वर्ग संघर्ष विकसित नहीं हो रहा है। पार्टी में नयी ताकतें नहीं आ रही हैं। ये सब गुप्त पार्टी के निर्माण में और शहरी व मैदानी क्षेत्र के आंदोलन के निर्माण में मौजूद गलत रुझानों के व्यक्तीकरण ही हैं।

हमारी पार्टी में मौजूद मध्यम व किसान वर्गीय सोच—विचार की वजह से क्रांतिकारी आंदोलन की अनुकूलताओं—प्रतिकूलताओं; तिरोगमन—पुरोगमनों, जीत—हारों को द्वंद्वात्मक रूप से समझने में विफल होने के कारण एक तबके में अतिविश्वास—आत्मविश्वास खोना; आत्मसंतुष्टि—निराशा का शिकार होना; आलोचनात्मक/विश्लेषणात्मक रवैया नहीं होने के कारण व्यक्तियों पर पूरी तरह विश्वास जताना या उन्हें पूरी तरह तिरस्कार करना; परिणामों (बदलावों) के अध्ययन में, निष्कर्ष/आकलन तक पहुंचने में संतुलन का खोना, नतीजतन प्रतिकूलताओं व पीछेहट की स्थिति को अनुकूलताओं व पुरोगमन में बदलने का साहस व दृढसंकल्प

खोकर दुश्मन के हमलों से भयभीत होकर भागना, सरेंडर करना, गद्दार बनना आदि जारी है।

केंद्रीय कमेटी में मौजूद मनोगतवाद के चलते 2020 की केंद्रीय पीओआर में एओबी, तेलंगाना, पश्चिमाघाटी, 2यू, पश्चिम बंगाल, उत्तर छत्तीसगढ़ के आंदोलनों को उनकी ताकत से अधिक कार्यभार निर्देशित किए गए। यह उन क्षेत्रों की ताकत को अति आकलन करने का नतीजा है। 2020 में तेलंगाना में तुलनात्मक रूप से पार्टी सदस्यता बढ़ने की स्थिति में, उस क्षेत्र को नए तरीकों में संगठित होने वाला गुरिल्ला जोन कह कर केंद्रीय कमेटी ने आकलन किया। मनोगतवाद की वजह से उस क्षेत्र के आंदोलन की ताकत को अति आकलन किया गया।

पार्टी व पीएलजीए में सर्वहारा वर्गीय पार्टी व गुरिल्ला जिंदगी से बेमेल जीवन शैली जारी है। यह फिजूल खर्च करने, कीमती चीजें खरीदने, कीमती इलोक्ट्रॉनिक चीजें खरीदने, आवश्यकता से अधिक चीजें खरीदने के रूप में जारी है। वरिष्ठ कामरेडों व मरीजों को खाने-पीने की चीजों में दी गई छूट की पृष्ठभूमि में उम्र व स्वास्थ्य समस्याओं से बिना कोई संबंध पार्टी व पीएलजीए के उल्लेखनीय हिस्सा खाने-पीने के विषय में नियमों का उल्लंघन कर रहा है। खाद्य पदार्थों के लिए जनता पर नहीं बल्कि बाजार पर निर्भर होना बढ़ गया। और कई जगहों में वहां के गांवों के उत्पादन और आर्थिक स्थिति पर ध्यान न देकर खाद्य पदार्थों का संग्रहण करने की पद्धति जारी है। इन सभी के कारण पार्टी व पीएलजीए के उल्लेखनीय हिस्से में सुख की लालसा बढ़ गई। सुख की लालसा की वजह से कठिनपूर्ण गुरिल्ला जीवनशैली के अमल में ढीलापन आता है और सामरिक क्षमता घट जाने का रास्ता बनता है। यह खासकर केंद्रीय व राज्य कमेटी सदस्यों की कमजोरी है।

दैनंदिन जिंदगी में वर्ग संघर्ष में — मास वर्क में पीएलजीए शामिल हो, ऐसा पार्टी पीएलजीए को नहीं चला रही है। दुश्मन के हमले से अपने आपको बचाए, ऐसा तमाम पीएलजीए को सक्रिय व क्रियाशील गुरिल्ला बलों के रूप में ढालने में पार्टी कमेटियों की भूमिका कमजोरपूर्वक है। नतीजतन पीएलजीए गुरिल्ला युद्ध में सक्रिय रूप से शामिल नहीं हो पा रही है। एलजीएस से लेकर कंपनियों तक साल में अधिक वक्त युद्ध की तैयारी या कंबाट में नहीं बल्कि सीसी और डीके एसजडसी से संबंधित सुरक्षा (प्रोटेक्शन), समन्वय और आपूर्ति आदि काम में शामिल हो रही हैं। इसकी वजह है कि जनाधार के घटने, स्रोतों को खोने और प्रतिकूलताओं के बढ़ने की हालत में इन कामों के निर्वाहन के लिए सीसी व एसजडसी ने वैकल्पिक मार्गों के बारे में सोच कर प्लान नहीं किया। इससे वो ज्यादातर वक्त केंद्रीकृत इकाइयों के रूप में नहीं रह रहे हैं। चूंकि रोजमर्रा जिंदगी में आवश्यक कंबाट स्किल्स और तकनीकी स्किल्स को विकसित करने के लिए ड्रिल्स और रिहार्सल्स नहीं किया जा रहा है, इसलिए उनकी सामरिक क्षमता कामजोर स्थिति में है।

पीएलजीए की जीवनशैली गुरिल्ला युद्ध को प्रभावी ढंग से जारी रखने लायक नहीं है बल्कि उसके विपरीत है। अनुशासनबद्ध विधेयता, प्रतिबद्धता, बलिदानी

भावना को अपनाने में, संघर्ष करने में, प्रचार करने में और जनता को संघर्ष में उतारने में एक क्रांतिकारी औजार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली संघर्षशैली—माओवादी संघर्ष शैली को विकसित करने में पीएलजीए में कमी व खामियां मौजूद हैं। दुश्मन का ज्यादा या कम आकलन करने के रूप में, कठिनतर जीवन शैली को चेतनाबद्ध तरीके से विकसित करने में, गुरिल्ला युद्ध नियमों को समय और स्थान की परिस्थितियों के अनुरूप सृजनात्मक रूप से लागू करने में कमियां व कमजोरियां जारी हैं। प्रधान नेतृत्व का राजनीतिक प्रयास कमजोर हो गया। दुश्मन के हमलें बढ़ने की वजह से गैर सर्वहारा रुझान बढ़ गए। भागने, सरेंडर करने और गद्दार बनने के अलावा नैतिक समस्याएं बढ़ रही हैं। विभिन्न स्तरों में ये समस्याएं आंदोलन के सभी क्षेत्रों में मौजूद हैं। इस अवधि में सक्रिय गुरिल्ला युद्ध को जारी रखने में मौजूद इन कमजोरियों व खामियों को नहीं सुधार पाए हैं।

दुश्मन द्वारा जारी प्रतिक्रांतिकारी युद्ध में हमारे नुकसानों के कारण

1. केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रतिक्रांतिकारी युद्ध तैयारियों व युद्ध की तीव्रता का सही आकलन नहीं कर पाना और बदलती परिस्थिति के अनुरूप उचित दावपेंच नहीं बना पाना।

विगत 2 दशकों से क्रांतिकारी आंदोलन के उन्मूलन के लिए केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न नामों से जारी प्रतिक्रांतिकारी बहुआयामी दमन अभियानों को तीव्र प्रतिरोध के जरिए विफल करना पार्टी व पीएलजीए का सकारात्मक पहलू ही है। हालांकि विगत एक दशक से जारी प्रतिक्रांतिकारी युद्ध को खासकर वर्तमान के कगार निर्णायक युद्ध को उच्च स्तरीय नेतृत्व कमेटियां मनोगतवादी नजर से समझ रही हैं। इससे बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप पार्टी व पीएलजीए को नहीं ढालने की वजह से हमारे बल कई बार दुश्मन का ज्यादा या कम आकलन कर रहे हैं। हमारी पार्टी कमेटियां व पीएलजीए की कमानें अपने दैनंदिन राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक कामकाज को इस आकलन कि भारत के क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी पीछेहट से गुजर रहा है, पर नहीं बल्कि अपने क्षेत्रों में सामने आयी कुछ अस्थायी अनुकूलताओं का ज्यादा आकलन करके संचालित कर रही हैं। यह उनके सोच में मौजूद पाक्षिक दृष्टिकोण का सबूत है। ऐसी मनोगतवादी गलतियों की वजह से दुश्मन के हमलों का शिकार होकर पार्टी कतारों व बलों को तीव्र रूप से खो रहे हैं। यह अनुभववादी मनोगतवाद है। यह सैद्धांतिक, राजनीतिक व सैनिक संबंधित गलत रुझान है।

2. गुप्त कामकाज, गुरिल्ला युद्ध नियमों व मौलिक दावपेंचों को नहीं समझने की वजह से सही रूप से अमल नहीं कर पाना।

3. मुखबिरों, कोवर्टों व डबल एजेंटों से युक्त दुश्मन की खुफिया व्यवस्था को नियंत्रित करने लायक रणनीतिक रूप से राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक प्रयास जारी नहीं कर पाना.

दुश्मन की इंटेलिजेन्स व्यवस्था को नियंत्रित करने के मकसद से हमने रणनीतिक नजर से राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक प्रयास नहीं किया. मुखबिर न बनने की चेतना जनता में बढ़ाने के लिए राजनीतिक प्रयास लगातार नहीं करने, जिन पर शक है उनका जनता में भंडाफोड़ नहीं करने, मुख्य मुखबिरों के उन्मूलन के लिए पहलकदमी नहीं दिखाने, स्थानीय जन निर्माणों में, पार्टी व पीएलजीए के निर्माणों में होने वाले बदलावों का आलोचनात्मक दृष्टिकोण से परिशीलन नहीं करने, सक्रिय भूमिका निभाने लायक स्थानीय जन निर्माणों को प्रशिक्षित नहीं करने आदि कारणों से मुखबिर व कोवर्टों को पहचान नहीं कर पा रहे हैं. यह कमजोरी लंबे समय से जारी है. इससे दुश्मन की खुफिया व्यवस्था को नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं. इसके साथ-साथ सीमित ताकतों से ही सही हमने अपनी इंटेलिजेन्स व्यवस्था का पुनर्निर्माण नहीं किया. नतीजतन हमारे पार्टी व पीएलजीए बलों की सूचना दुश्मन को लगातार मिल रही है. इससे दुश्मन सूचना आधारित हमले करके पार्टी, पीएलजीए व स्थानीय निर्माणों को तीव्र रूप से नुकसान पहुंचा रहा है.

पार्टी, पीएलजीए व क्रांतिकारी आंदोलन को बचाने की जिम्मेदारी जनता की ही है, यह चेतना बढ़ाने के लिए लगातार राजनीतिक प्रयास नहीं करने के फलस्वरूप और स्थानीय निर्माणों, पार्टी व पीएलजीए की गलतियों/त्रुटियों की आलोचना करने की दिशा में मुखबिरों व कोवर्टों को पहचान करके पार्टी को सावधान करने लायक जनता को चेतनाबद्ध नहीं करने की वजह से मुखबिरों व कोवर्टों की समस्या तीव्र समस्या बन चुकी है.

4. कठिनतर गुरिल्ला जीवन शैली को अपनाने के लिए तैयार न होना व युद्ध की तैयारी में कमी.
5. बदलती सामाजिक परिस्थितियों में अस्थायी पीछेहट की अवधि में कारपेट सेक्युरिटी इलाकों में स्थानीय जन निर्माणों के नुकसान होने, कमजोर होने, निष्क्रिय होने की वजह से वर्ग संघर्ष-गुरिल्ला युद्ध को बनाए रखने में कमियां, कमजोरियां व सीमितताएं जारी हैं. इसकी वजह से जनाधार नहीं बढ़ते हुए दुश्मन की सत्ता संगठित हो रही है. इससे दुश्मन की ताकत बढ़ते हुए हमारी पार्टी, पीएलजीए व स्थानीय निर्माणों पर हमलें बढ़ कर दुश्मन के लिए अनुकूलताएं बढ़ रही हैं.
6. मोबाइल फोन, इंटरनेट, वाकीटाकी के इस्तेमाल में खामियां जारी रहना.

प्रतिक्रांतिकारी सूरजकुंड-कगार के निर्णायक युद्ध में दुश्मन की ताकत बड़े पैमाने पर बढ़ कर, दुश्मन के स्वभाव (चरित्र) में मौलिक बदलाव आया। बढ़ती दुश्मन की ताकत और दुश्मन के चरित्र में आए बदलाव को चिह्नित नहीं करने की वजह से हमारी पार्टी, पीएलजीए के बल पुरानी पद्धतियों में ही सोचते हुए बदली हुई परिस्थिति के अनुरूप आत्मरक्षात्मक दावपेंच पर अमल नहीं करने की वजह से 2024 जनवरी से अगस्त तक डीके में 170 कामरेड व देशभर में 199 कामरेड शहीद हुए।

इन नुकसानों की वजह से जनाधार घटने के साथ-साथ पीएलजीए बलों के घटने की स्थिति में विगत दो वर्षों में तेलंगाना, एओबी व बिहार राज्यों में गुरिल्ला युद्ध कार्रवाइयों का संचालन नहीं कर पाए हैं। एमएमसी में ऐसी कुछ घटनाओं में जब पीएलजीए बलों पर दुश्मन बलों द्वारा हमलें किए गए, आत्मरक्षा के तहत दुश्मन बलों को मार भगाया गया है। ओडिशा में कुछ गुरिल्ला युद्ध कार्रवाइयों को अंजाम दिया गया। बीजे व पू.बि-पू.झा. स्पेशल एरियाओं में गुरिल्ला कार्रवाइयों में गिरावट आयी। डीके में भी गुरिल्ला कार्रवाइयों में गिरावट आई। डीके, बीजे व पू. बि-पू.झा. क्षेत्रों में दुश्मन से हथियार जब्त करने वाली घटनाएं बेहद कम हो गई हैं। हथियार, कारतूस व विस्फोटक सामग्री की किल्लत की वजह से गुरिल्ला युद्ध बहुत सीमितताओं का सामना कर रहा है। कुल मिलाकर देखने से देशभर में गुरिल्ला जोनों व लाल प्रतिरोध क्षेत्रों में गुरिल्ला युद्ध कार्रवाइयों की विस्तृति घट गई। गुरिल्ला युद्ध का भूभाग घट गया। लाल प्रतिरोध व गुरिल्ला जोन क्षेत्रों का दायरा घट गया। आंदोलन के क्षेत्र में कारपेट सेक्युरिटी के विस्तरण व संगठनीकरण को नहीं रोक पाए। इन सभी के फलस्वरूप गुरिल्ला जोन व गुरिल्ला बेसों ने धक्का खाया और लाल प्रतिरोध क्षेत्र कमजोर हो गए।

बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों में वर्ग संघर्ष को सक्षम रूप से संचालित करने, शहरी, मैदानी व जंगली क्षेत्रों के आंदोलनों को एक दूसरे के पूरक के रूप में, समन्वय के साथ संचालित करने, खुले-गुप्त, कानूनी-गैर कानूनी संघर्षों को समन्वय के साथ संचालित करने, अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार करने की दिशा में वर्ग संघर्ष – गुरिल्ला युद्ध को सक्षम रूप से चलाने, कारपेट सेक्युरिटी क्षेत्रों में वर्ग संघर्ष-गुरिल्ला युद्ध को सक्षम रूप से चलाने लायक हमारी पार्टी को सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक रूप से विकसित होना चाहिए।

विगत साढ़े तीन सालों की अवधि में देशभर में पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे के निर्माणों द्वारा किए गए राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक कामकाज या वर्ग संघर्ष – गुरिल्ला युद्ध कार्य की हमने समीक्षा की। विगत से हमारी समझदारी व व्यवहार में जारी खामियों, कमजोरियों व सीमितताओं को भी उल्लेखन किया गया। केंद्र व राज्य सरकारें विगत सात महीनों से कगार के तहत निर्णायक युद्ध चलाते हुए पार्टी व पीएलजीए बलों, स्थानीय निर्माणों व जनता का बड़े पैमाने पर उन्मूलन करते हुए, आगामी 2 वर्षों में देशभर में क्रांतिकारी आंदोलन का समूल उन्मूलन

करने के दुष्ट लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रही हैं। ऐसी स्थिति में हमारा प्रधान कार्यभार होगा कि भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को धक्का नहीं पहुंचने देते हुए, बचाते हुए पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे के निर्माणों को बचाते हुए वर्ग संघर्ष व गुरिल्ला युद्ध को जारी रखना है। इस लक्ष्य को हासिल करने लायक पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे को ढाल देंगे।

बदली सामाजिक परिस्थितियों में वर्ग संघर्ष व जन युद्ध को सक्षम रूप से संचालित करने और दुश्मन द्वारा जारी निर्णायक युद्ध से क्रांतिकारी आंदोलन व आत्मगत ताकतों को बचाने लायक पार्टी को ढाल देंगे।

नक्सलबाड़ी व श्रीकाकुलम आंदोलन के पीछेहट के बाद राजनीतिक प्रयास के जरिए क्रांतिकारी वर्गों में हमने पार्टी का निर्माण किया। 1978 से किसान, छात्र-युवजन, बुद्धिजीवी व मजदूर आंदोलनों के उभार का इस्तेमाल करके व्यापक रूप में अंशकालीन व पेशेवर क्रांतिकारियों (पीआर) से युक्त गुप्त व जुझारू पार्टी का निर्माण किया। बाद में राजनीतिक परिणामों और आंदोलन की ताकत व कमजोरियों पर आधार होकर सही दावपेंचों को बनाते हुए उन पर खरा उतरते हुए हालांकि कुछ राज्यों में अस्थायी रूप से पीछेहट की स्थिति का शिकार हुए हो, लेकिन भारत की क्रांति को आगे बढ़ाया। 2007 से खासकर 2012 से गुप्त पार्टी के निर्माण में, गुप्त कामकाज के तरीके के अमल में तुलनात्मक रूप से कमियां, कमजोरियां व सीमितताएं बढ़ती गईं। राजनीतिक व सैनिक रूप से पार्टी कई जीतों को हासिल करने के बावजूद वह उनका सदुपयोग नहीं कर पायी। नतीजतन पार्टी कमजोर होकर, अन्य क्षेत्र भी कमजोर हो गए। इस स्थिति को सुधारना चाहिए। राजनीतिक प्रयास के जरिए वर्ग संघर्ष के जरिए शहरी, मैदानी व जंगली क्षेत्रों में दुश्मन के लिए अभेद्य, गुप्त व समरशील पार्टी और जनता के साथ जीवंत संबंध रखने वाली पार्टी, अंशकालीन पार्टी सदस्यों व पेशेवर क्रांतिकारियों से युक्त विशाल व ताकतवर पार्टी का निर्माण करना चाहिए और विकसित करना चाहिए।

शहरी, मैदानी व वन क्षेत्रों में जन संघर्षों में शामिल होने वाले लोगों में से लगातार पार्टी सदस्यों को तैयार करके गुप्त रूप से पार्टी सेल व स्थानीय पार्टी कमेटियों का निर्माण करना चाहिए। लीगल-इल्लीगल समन्वय तंत्र का निर्माण करना चाहिए। कोरियरिंग व्यवस्था, लैजान पोस्टों का निर्माण करना चाहिए। वर्ग संघर्षों में एकजुट होने वालों पर निर्भर होकर पार्टी में लगातार नयी ताकतों की भर्ती करते हुए आत्मगत ताकतों को बढ़ाते हुए पार्टी को मजबूत करना चाहिए।

पार्टी में जारी बुर्जुआ, पेटी बुर्जुआ और किसान वर्ग के सोच-विचार का पीछा करते हुए राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक क्षेत्र में पैदा होने वाले अनुभववादी व कठमुल्लावादी मनोगतवादी रुझानों को सुधारना चाहिए और उसे सच्ची सर्वहारा वर्गीय पार्टी के रूप में ढालना चाहिए। राजनीतिक परिणामों के आधार पर आंदोलन की ताकत व कमजोरियों के आधार पर सही राजनीतिक व सैनिक दावपेंचों को

बनाते हुए वर्ग संघर्ष—गुरिल्ला युद्ध को सक्षम रूप से नेतृत्व देने लायक पार्टी को विकसित करना चाहिए। भाकपा (माओवादी) के गठन के बाद से पार्टी को हुए तीव्र नुकसानों से सबक लेकर आत्मगत ताकतों की रक्षा करने को, उन्हें लगातार बढ़ाने को, क्रांतिकारी आंदोलन को निरंतरतापूर्वक नेतृत्व (कंटिन्युटी ऑफ लीडरशिप) पहुंचाने, पार्टी कमेटियों में त्री इन वन (सीनियर, मध्यस्थ उम्र और जूनियर) कंपोजिशन रहने लायक पार्टी को ढालने को महत्व दना चाहिए।

चूंकि पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे में मजदूर वर्ग नहीं है, पेटीबुर्जुआ वर्ग से आए लोग नाममात्र रूप से हैं, इसलिए उच्च स्तरीय नेतृत्व कमेटियों, निचले स्तर की कमेटियों व पार्टी कतारों में सैद्धांतिक, राजनीतिक स्तर तुलनात्मक रूप से कम है। इस स्थिति को बदल डालेंगे। मालेमा सिद्धांत के अध्ययन में हमारी मौलिक लाइन व पालिसियों के अध्ययन में जारी आलस्य, स्वतःस्फूर्तता व सरसरी अध्ययन को सुधारना चाहिए। मालेमा सिद्धांत, हमारी लाइन व नीतियों को बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों के साथ आंदोलन की ताकत और कमजोरी के अनुसार जोड़ कर सही राजनीतिक व सैनिक दावपेंचों को बना कर, समृद्ध कर, सर्वहारा वर्ग के दृढसंकल्प और माओवादी कार्यशैली के साथ व्यवहार में उतरना चाहिए।

देशभर में कई जनसंगठनों के लिए पार्टी ऑर्गनाइजर्स नहीं रहने के चलते उन्हें हमारी राजनीतिक दिशा के अनुरूप संचालित नहीं कर पा रहे हैं। इनमें हमारा राजनीतिक प्रयास कमजोर स्थिति में हैं। जनसंगठनों में उत्पन्न राजनीतिक व सांगठनिक समस्याओं और शहरी आंदोलन के निर्माण की विफलता के पीछे यह एक मुख्य वजह है। इससे सबक लेकर हर जनसंगठन को चलाने के लिए पार्टी ऑर्गनाइजर्स को तैयार करना और उनमें राजनीतिक प्रयास को तेज करना चाहिए। अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार करने के मकसद से शहरी, मैदानी व जंगली क्षेत्रों में खुले जनसंगठनों व कानूनी जनवादी संगठनों (लीगल डेमोक्रेटिक ऑर्गनाइजेशन) को सक्षम रूप से संचालित करना चाहिए। ऐसे गलत कामकाज के तरीके जिनके चलते कानूनी व खुले जन संगठन की वैधता (लीगलिटी) खो जाने की संभावना है, को छोड़ देना चाहिए। खुले जन संगठनों का दो हिस्सों में वर्गीकरण करके उनमें से कुछ संगठनों को उनकी वैधता को बनाए रखते हुए लंबे समय तक चलाते हुए, कुछ संगठनों को कानूनन सीमितताओं को पार करने की चेतना बढ़ाते हुए चलाना चाहिए। आज न सिर्फ डीके बल्कि देश में नए-नए अस्तित्व में आए और विगत से कार्यरत खुले जन संगठनों को दुश्मन लंबे समय तक नहीं चलने देगा। इसीलिए जब का तब नए खुले संगठनों का गठन करके व्यापक जनता को वर्ग संघर्ष में एकत्रित करना चाहिए।

हालांकि पार्टी और पीएलजीए में प्रधान रूप से आदीवासी किसान वर्ग और किसान वर्ग का अधिक तादाद में रहना सकारात्मक विषय ही है, लेकिन मजदूर और शहरी निम्न पूंजीपति वर्गों का बहुत कम रहना क्रांतिकारी आंदोलन की कमजोरी ही है। शहरी व मैदानी आंदोलन का पुनरनिर्माण करते हुए मजदूर वर्ग,

शहरी मध्यम वर्ग व मैदानी क्षेत्र के किसान वर्ग को क्रांतिकारी आंदोलन में गोलबंद व संगठित करते हुए इस कमजोरी को पार करना चाहिए.

आंदोलन में उत्पन्न राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक समस्याओं का हल करने लायक जिला व एरिया कमेटीयों के सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक स्तर को बढ़ा कर उन्हें प्रशिक्षित करने की दिशा में केंद्रीय व राज्य कमेटी सदस्यों के कामकाज के तरीके में बदलाव लाएंगे. ठोस समस्याओं का ठोस रूप से विश्लेषण करके, विभिन्न क्षेत्रों के आंदोलन की ताकतों व कमजोरियों में होने वाले बदलावों का सही समय पर सही आकलन करके बदली हुई आंदोलन की ताकत के अनुरूप आवश्यक राजनीतिक कार्यभारों व दावपेंचों को बनाने की क्षमता बढ़ाने की दिशा में अध्ययन शैली और कमेटी की कार्यशैली में बदलाव लाना चाहिए.

क्रांतियां वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप जारी रहती हैं. इसलिए पार्टी को उन वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप राजनीतिक व सैनिक दावपेंच (संघर्ष और निर्माण रूपों में) बना कर क्रांतिकारी आंदोलन को संचालित करना होगा. अगर ऐसा नहीं किया जाता क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी पीछेहट, हार व विनाश (उन्मूलन) का शिकार होंगे. यह ऐतिहासिक सच्चाई है. इसलिए मार्क्सवादी महान शिक्षक लेनिन ने कहा "मार्क्सवादियों को सूत्रों को रटना नहीं चाहिए, कल के सिद्धांत को पकड़ कर लटकना नहीं चाहिए, बल्कि वास्तविकता से संबंधित सच्चाइयों को पहचान करना चाहिए, कौनसा संभव होगा, इससे नहीं बल्कि सच्चाई क्या है इससे आगे बढ़ना चाहिए." इसलिए हमने निर्णय लिया है कि शहरी, मैदानी व जंगली क्षेत्रों में वस्तुगत बदलावों को समझने के लिए निर्णीत मियाद के अंदर सामाजिक शोध और वर्ग विश्लेषण करना होगा. उसके मुताबिक शहरों में संगठित व असंगठित मजदूरों व कर्मचारियों की स्थिति के बारे में, औद्योगिक व सेवाक्षेत्रों में जारी लूट व शोषण के बारे में, मैदानी क्षेत्र की सामाजिक जिंदगी के बारे में, जंगली क्षेत्र की सामाजिक स्थिति, टेरेन, राज्ययंत्र की घुस-पैठ के बारे में ठोस सर्वेक्षण, सामाजिक तबकों की स्थिति के बारे में सर्वेक्षण, युवाओं के ऊपर साम्राज्यवादी व सामंतवादी संस्कृति के प्रभाव के बारे में सर्वेक्षण, जंगली क्षेत्रों में हिंदू-ईसाई धर्मों की घुस-पैठ के चलते आदिवासी सामाजिक जिंदगी में उत्पन्न बदलावों के बारे में सर्वे करने की जरूरत है. साम्राज्यवादी वैश्वीकरण का पीछा करते हुए विगत से ज्यादा राज्यसत्ता का फासीवादीकरण हुआ. प्रतिघातुकता सभी क्षेत्रों में, सभी जगहों में संस्थागत रूप लेकर संगठित हो रही है. ऐसी हालत में शहरी क्षेत्रों में व मैदानी क्षेत्रों में पार्टी के निर्माण में सामने आ रही समस्याओं के हल के लिए शहरी कामकाज दस्तावेज को बुनियादी मार्गदर्शक के रूप में लेते हुए ठोस मार्गदर्शक नियमों को तय करना चाहिए.

शहरी व मैदानी क्षेत्रों के आंदोलन के निर्माण में मौजूद गलत रुझानों को सुधारना चाहिए.

जन संगठनों व जन संघर्षों में जारी राजनीतिक व सांगठनिक समस्याओं व

कमजोरियों को सुधारने के लिए एजुकेशन-रेक्टिफिकेशन कंपेइन (ईआरसी - शिक्षा-भूलसुधार अभियान) चलाना चाहिए. तेलंगाना व आंध्रप्रदेश राज्यों के जन संगठनों में जारी ईआरसी को प्रभावी ढंग से जारी रखना चाहिए. डीके में स्थानीय निर्माणों में से एक सेक्शन द्वारा स्थानीय लुटेरी ताकतों व मुखियाओं के साथ जारी वर्ग समझौता व्यवहार जोकि राजनीतिक कमजोरी है को सुधारना चाहिए. ऐसे लोगों को नेतृत्व की जिम्मेदारी से हटाकर गरीब व निम्न मध्यम वर्ग में से पुरोगामी, क्रियाशील व समरशील ताकतों को स्थानीय निर्माण में लाकर वर्ग संघर्ष को तेज करेंगे और जनाधार को मजबूत करना चाहिए.

दुश्मन के लिए अभेद्य व गुप्त पार्टी के निर्माण के हिस्से के तहत लीगल व इल्लीगल समन्वय के मेकानिज्म, कोरियरिंग व्यवस्था व लैजान पोस्टों की व्यवस्था के इंतजाम के लिए योजनाबद्ध तरीके से दृढ़तापूर्वक काम करना चाहिए.

क्रांतिकारी आंदोलन की प्रतिकूलताओं को अनुकूलताओं में, तिरोगमन को पुरोगमन में, हार को जीत में बदलने के संबंधित सैद्धांतिक व राजनीतिक समझदारी को पार्टी व पीएलजीए बलों में बढ़ाते हुए सरेंडर व गद्दरियों को रोकना चाहिए.

मजदूर वर्गीय पार्टी और गुरिल्ला जीवनशैली से बेमेल जीवनशैली को तुरंत छोड़ देना चाहिए. फिजूल खर्च को रोकने के लिए फिर नियमों को बना कर दृढ़तापूर्वक लागू करना चाहिए.

हमारी राजनीतिक रणनीति में शासक वर्गों के बीच के अंतरविरोधों को प्रमुख अंतरविरोध बताए गए. शासक वर्गों के बीच मौजूद अंतरविरोध क्रांतिकारी आंदोलन के पुरोगमन के लिए उपयुक्त हो, ऐसे राजनीतिक दांवपेंच बनाना चाहिए. गांव, एरिया, डिविजन/जिले स्तर में जब का तब बदलने वाले राजनीतिक फेरबदलों और आंदोलन की ताकतों व कमजोरियों पर आधार होकर प्रधान दुश्मन को अलग-थलग करते हुए, दुश्मनों में से एक सेक्शन को तटस्थ करते हुए, दुश्मनों में से ही प्रधान दुश्मन के खिलाफ हम से हाथ मिलाने वालों के साथ कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चे का गठन करना चाहिए. चाहे कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चे के गठन के लिए हो या रणनीतिक संयुक्त मोर्चे के गठन के लिए हमारी खुद की ताकत ज्यादा होना हालांकि एक मुख्य पहलू ही है लेकिन इसे अनिवार्य नहीं समझना चाहिए. देश, राज्य व जिले के राजनीतिक परिवर्तन के मुताबिक प्रधान दुश्मन के खिलाफ जनता व दुश्मन वर्गों में से एक तबका मिलकर संघर्ष करने की राजनीतिक स्थिति अगर उत्पन्न होती है, तो संयुक्त मोर्चे का गठन करने और उसमें शामिल होने के जरिए ही आंदोलन की ताकत बढ़ेगी.

क्रांतिकारी आंदोलन जिन राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक समस्याओं का सामना कर रहा है, उनमें से अधिकतर हमारी पार्टी में मजबूती से मौजूद मनोगतवाद के कारण जारी गलतियों/कमियों, कमजोरियों, रुझानों के व्यक्तीकरण ही हैं. उन्हें सुधारने के लिए पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे में ईआरसी को

संचालित करना चाहिए. बदली हुई परिस्थितियों में वर्ग संघर्ष को सक्षम रूप से संचालित करने लायक और दुश्मन द्वारा जारी निर्णायक युद्ध से क्रांतिकारी आंदोलन और आत्मगत ताकतों को बचाने लायक पार्टी को ढाल देना चाहिए. चार क्रांतिकारी वर्गों में, उत्पीड़ित तबकों में, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं में पार्टी का निर्माण करके संगठित करना चाहिए. अलग-थलग पड़ गए वन क्षेत्रों के आंदोलन के समर्थन में शहरी व मैदानी क्षेत्र में आंदोलनों को पुनरनिर्माण करना चाहिए. देश के विशाल क्षेत्रों में पार्टी का विस्तार करना चाहिए. इन कार्यभारों को हासिल करने लायक पार्टी ताकतों की तैनाती में फेरबदल करते हुए पार्टी को बचाना चाहिए. पार्टी में जारी खामियों/गलतियों, कमजोरियों एवं सीमितताओं को सुधारते हुए, पार करते हुए सच्ची सर्वहारा वर्गीय पार्टी, समरशील पार्टी व बोल्शेविक पार्टी के रूप में हमारी पार्टी को ढाल देंगे.

बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों, अस्थायी पीछेहट की अवधि में, कारपेट सेक्युरिटी के बीच में गुरिल्ला युद्ध-जनयुद्ध को सक्षम रूप से संचालित करने लायक, दुश्मन द्वारा जारी निर्णायक युद्ध से क्रांतिकारी आंदोलन, पार्टी व पीएलजीए को बचाने की दिशा में गुरिल्ला युद्ध को जारी रखने लायक पीएलजीए को ढाल देंगे.

पीएलजीए विगत साढ़े तीन सालों से अस्थायी पीछेहट से गुजर रही क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए गुरिल्ला युद्ध को संचालित कर रही है. दूसरी ओर केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा जनवरी 2024 से कगार के तहत प्रतिक्रांतिकारी निर्णायक युद्ध जारी है. इस युद्ध में आंदोलनरत क्षेत्रों में पीएलजीए को तीव्र रूप से नुकसान हो रहा है. गुरिल्ला बेसों सहित सभी आंदोलनरत क्षेत्रों में कारपेट सेक्युरिटी के तहत कैंपों का विस्तार करते हुए दुश्मन संगठित हो रहा है. 2019 से दिसंबर 2023 तक माओवादी आंदोलनरत क्षेत्रों में 199 कारपेट सेक्युरिटी कैंपों/फारवर्ड ऑपरेशनल बेस कैंपों को स्थापित करने की घोषणा केंद्रीय गृह मंत्रालय ने की. इसके तहत हर एक कैंप में 300-500 लोगों के हिसाब से लगभग 60,000-1,00,000 अतिरिक्त सशस्त्र बलों को तैनात किया गया. जनवरी 2024 से अभी तक देशभर में लगभग 50 कैंपों को स्थापित किया गया. केंद्र व राज्य सरकारों ने घोषणा की कि आगामी दिनों में बस्तर क्षेत्र में 29 कैंप स्थापित होंगे. वर्तमान में दुश्मन प्रधान रूप से घेराबंदी हमला पद्धति का इस्तेमाल कर रहा है. इस हमले के तहत दुश्मन द्वारा हर एक ऑपरेशन में 1500 से 3000 तक कमांडो, अर्द्ध सैनिक बलों व सेना के बलों को तैनात किया जा रहा है. हर एक ऑपरेशन में 20-25 गांवों के दायरे यानी 10 किमी के दायरे की घेराबंदी करके, तलाशने और उन्मूलन करने (कार्डन, सर्च, किल) की पद्धति का पालन किया जा रहा है.

पीएलजीए की ताकत, क्षमताएं और बंदूक की ताकत कारपेट सेक्युरिटी व्यवस्था के विस्तार व संगठितीकरण को रोकन की स्थिति में नहीं हैं. उन दिनों से

ही जब केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रतिक्रांतिकारी रणनीतिक समाधान हमले का पीएलजीए प्रतिरोध कर रही थी, पीएलजीए में जारी राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक समस्याओं का हल करना चाहिए। बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों में, अस्थायी पीछेहट के समय में, कारपेट सेक्युरिटी के बीच में गुरिल्ला युद्ध को सक्षम रूप से संचालित करने लायक दुश्मन द्वारा जारी निर्णायक युद्ध से पार्टी, पीएलजीए, संयुक्तमोर्चे व क्रांतिकारी आंदोलन को बचाने की दिशा में गुरिल्लायुद्ध को आगे बढ़ाने के लायक पीएलजीए को ढाल देना चाहिए।

हमारी पीएलजीए वह सेना है, जो उत्पीड़ित वर्गों की राज्यसत्ता को हासिल करने के लिए लुटेरे वर्गों के सशस्त्र बलों से लड़ती है। हमारी पीएलजीए के कामकाज के तरीके में ऐसे बदलाव लाना चाहिए कि वह अपने प्रधान कार्यभार को हासिल करने के लिए जनता के साथ जीवंत व आत्मीय संबंध बनाए रखते हुए जनता में राजनीतिक प्रयास करे, जनता के उत्पादन में, जनकल्याणकारी कार्यक्रम में शामिल हो जाए, राज्यसत्ता के अंगों के निर्माण करने में जनता की मदद करे, जनता को संगठित करने में ऑर्गनाइजेशन बलों को सहयोग करे, जन दुश्मन का दमन करे।

अब जब सर्वहारा वर्ग से और छात्र-युवजन-बुद्धिजीवियों से युक्त शहरी मध्यम वर्ग से पीएलजीए में रिक्रूटमेंट नहीं होने की स्थिति में उसकी वर्गीय संरचना में आदिवासी किसान वर्ग ही अधिक संख्या में है। हालांकि यह एक सकारात्मक विषय ही है, लेकिन यह उसकी कमजोरी भी है। उस कमजोरी का पीछा करते हुए उसमें किसान वर्ग के पिछड़ेपन से उत्पन्न गलत विचारधारा और गलत व्यवहार जारी है। इस समस्या को पार करने के मकसद से वर्गसंघर्ष कार्यक्रम चलाना चाहिए।

पीएलजीए द्वारा सामना की जा रही मुख्य समस्या है कि अनुशासन हीनता, नैतिक समस्याएं, आंदोलन से भागना, आत्मसमर्पण करना और गद्दार बनना। दुश्मन के हमले में हमारे बलों को नुकसानों से बचाते हुए, हमारी प्रतिरोध कार्रवाइयों के जरिए दुश्मन को नुकसान पहुंचाते हुए, जनयुद्ध के संचालन के बारे में हमारे बलों को शिक्षित करते हुए इस समस्या का हल करना चाहिए।

हमारे युद्ध विन्यास ऐसे होने चाहिए कि गुरिल्ला युद्ध को प्रधान रूप से छोटी व विकेंद्रीकृत कार्रवाइयों के जरिए जारी रखा जाए और जरूरत के अनुसार अगर बलों का केंद्रीकरण करने से जल्द ही विकेंद्रीकरण किया जाए।

हमारे युद्ध का संचालन ऐसा रहा है कि स्थानीय कमांडरों/कमानों की पहलकदमी पर निर्भर होकर नहीं बल्कि उच्च स्तरीय कमांडरों/कमानों पर निर्भर होकर और स्थानीय आपूर्तियों पर निर्भर होकर नहीं बल्कि ऊपर कमेटियों/कमानों की आपूर्तियों पर निर्भर होकर गुरिल्ला युद्ध जारी है। इससे स्थानीय गुरिल्ला बलों व कमांडरों की पहलकदमी नहीं बढ़ेगी और जनता पर निर्भर होकर आपूर्तियों को

संग्रहित करने की पद्धति विकसित नहीं होगी. स्थानीय कमांडरों की पहलकदमी व स्थानीय आपूर्तियों पर निर्भर होकर गुरिल्ला युद्ध को जारी करने की दिशा में प्रयास करना चाहिए.

पार्टी द्वारा निर्देशित राजनीतिक कार्यभारों को हासिल करने के लिए जनयुद्ध जारी है. आंदोलन की ताकत के अनुसार गुरिल्ला युद्ध, चलायमान युद्ध व मोर्चाबद्ध युद्ध के जरिए जनयुद्ध आगे बढ़ता है. इसलिए जनयुद्ध दरअसल राजनीतिक कार्यभार से संबंधित है. वह सिर्फ मिलिटरी संबंधित विषय नहीं है. जनयुद्ध विस्तार और तेज रूप से चलना है तो पहले वर्ग संघर्ष विस्तार व तेज रूप से चलकर जनाधार बढ़ना होगा. इस तरह वर्ग युद्ध और जन युद्ध एक दूसरे पर आधारित हैं. इसलिए बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों में, अस्थायी पीछेहट के दौर में, कारपेट सेक्युरिटी क्षेत्रों में वर्ग संघर्ष को सक्षम रूप से संचालित करने योग्य पार्टी को अपने आपको ढाल कर पीएलजीए और संयुक्त मोर्चे को प्रशिक्षित करना चाहिए. बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों में वर्ग संघर्ष को जारी रखने के प्रयास में पीएलजीए को भाग लेना चाहिए. मास वर्क इकाइयों और कंबाट इकाइयों को दैनंदिन जिंदगी में हो या प्रतिरोध कार्यक्रम में समन्वय के साथ काम करने के लिए आवश्यक समन्वय निर्माणों या पद्धतियों का इंतजाम करना होगा. आपसी सहयोग से मास वर्क और मिलिटरी वर्क को चलाना चाहिए.

अब जब डीके सहित सभी क्रांतिकारी आंदोलन के क्षेत्रों में रिक्रूटमेंट घट गया, कुछ राज्यों (डीके में भी कुछ डिविजनों) में नहीं है, डीके से बलों को रिट्रीट किया जा रहा है, इस पृष्ठभूमि में पीएलजीए फार्मेशनों का पुनरव्यवस्थीकरण करना चाहिए. इसके तहत विगत के हमारे प्रस्ताव के अनुसार चार-चार लोगों के दो ग्रुपों से युक्त यूनिट को दस्ता/सेक्शन के रूप में, दो सेक्शनों से युक्त यूनिट को प्लाटून के रूप में, दो प्लाटूनों और एक हेडक्वार्टर से युक्त यूनिट को कंपनी के रूप में पुनरव्यवस्थीकरण करना चाहिए. पुनरव्यवस्थीकृत बलों को राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक रूप से प्रशिक्षित करते हुए सुशिक्षित जन छापामारा बलों के रूप में ढाल देना चाहिए.

अब जब कारपेट सेक्युरिटी का विस्तार और संगठनीकरण हुआ, रीजनल कमान और रीजनल बल तमाम रीजियन में समन्वय के साथ काम करने की स्थिति नहीं है, ऐसी स्थिति में सीआरसी और ईआरसी को रद्द करना चाहिए. तेलंगाना, एओबी और बीजे में मौजूद रीजनल बलों को संबंधित राज्य कमेटियों को सौंपना चाहिए/उन्हें राज्य बलों के रूप में बदलना चाहिए. ओडिशा में मौजूद कंपनी बलों को उस राज्य कमेटी को सौंपना चाहिए. रीजनल कमेटियों के रद्द होने की इस स्थिति में पीएलजीए-जनयुद्ध की समस्याओं का अध्ययन करके मार्गदर्शन देने के लिए और दुश्मन के हमले का अध्ययन करके आत्मरक्षा-हमले के लिए दावपेंच बनाने के लिए जिन राज्यों में पीएलजीए यूनिट मौजूद हैं, वहां राज्य कमेटियों में से एक कामरेड को मिलिटरी क्षेत्र की जिम्मेदारी निभानी चाहिए. राज्यों के मिलिटरी

क्षेत्र के जिम्मेदार कामरेडों और सीएमसी सदस्यों को समन्वय के साथ पीएलजीए-जनयुद्ध की समस्याओं के हल के लिए प्रयास करना चाहिए।

डीके, बीजे व पू.बि.-पू.झा. में राज्य के सैनिक आयोगों (मिलिटरी कमिशन) को बनाए रखना चाहिए। इन क्षेत्रों में सब जोनल, डिविजनल, एरिया कमानों और मिलिशिया कमानों को बनाए रखना चाहिए।

अब जब जनाधार घट गया और कारपेट सेक्युरिटी बढ़ गई, इस स्थिति को ध्यान में रख कर मास वर्क बलों और कंबाट बलों को निरंतर चलन में रहना चाहिए। गुप्त कार्यशैली के अमल में, गुरिल्ला युद्ध नियमों के अमल में अभी तक जारी गलतियों को तुरंत सुधारना चाहिए। गुप्तता, रफ्तार, निरंतर सतर्कता, डेरा बदलना आदि दावपेंचों पर दृढसंकल्प के साथ अमल करना चाहिए। 'जब दुश्मन आगे बढ़ता है, हम पीछे हटते हैं; जब दुश्मन डेरा डालता है, हम परेशान करते हैं, जब दुश्मन थकता है, हम हमला करते हैं, दुश्मन रिट्रीट होता है, हम पीछा करते हुए भगाते हैं' इस माओवादी गुरिल्ला युद्ध कार्यनीतियों पर अमल करना है। वर्तमान में दुश्मन के घेराबंदी हमले में नुकसान न हो, इसलिए जब हमें पता चलता है कि दुश्मन हमला करने आया, तुरंत मास वर्क बलों और कंबाट बलों को घेराबंदी के दायरे से बाहर पीछे हटना चाहिए। उसके बाद जब दुश्मन वापस जाता है, उसकी कमजोरियों को चिह्नित करके ताकत के अनुसार प्रतिरोध करना चाहिए। नहीं तो विभिन्न इलाकों के जनाधार, पीएलजीए बलों की सामरिक क्षमता व टेरेन पर निर्भर होकर उचित दावपेंचों पर अमल करना चाहिए।

ऐसी स्थिति में जब जनाधार घट गया, पीएलजीए की ताकत कम हो गयी, आंदोलन के सभी क्षेत्रों में कारपेट सेक्युरिटी का विस्तार हुआ और विस्तार होने वाला है, छोटी-विकेंद्रीकृत कार्यवाहियों के रूप में यथासंभव गुरिल्ला युद्ध को जारी रखना चाहिए। आत्मरक्षात्मक दावपेंचों के तहत मास वर्क में मौजूद बल हो या कंबाट बल हो किसी को भी अगर दुश्मन हमला करने से प्रतिरोध के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। छोटी व विकेंद्रीकृत कार्रवाइयों के रूप में युद्ध को जारी रखना चाहिए।

छोटी-विकेंद्रीकृत कार्रवाइयों के रूप में गुरिल्ला युद्ध को जारी रखने के लिए गुरिल्ला बटालियन को कंपनियों, प्लाटूनों व सेक्शनों के रूप में विकेंद्रीकृत होना चाहिए। कंपनियों को प्लाटूनों, सेक्शनों, ग्रूप्स/टीमों के रूप में; प्लाटूनों को सेक्शनों व ग्रूप्स/टीमों के रूप में; दस्तों/सेक्शनों को ग्रूप्स में विकेंद्रीकृत होकर गुरिल्ला युद्ध को जारी रखना चाहिए। रेक्की व युद्ध सामग्री का संग्रहण आदि सभी तैयारियों को सही समय पर पूरा करके जीत की गैरंटी रहने से ठोस परिस्थितियों के मुताबिक बलों का केंद्रीकरण करके, तेजी से केंद्रीकृत कार्रवाई को पूरा करके बलों का तुरंत ही विकेंद्रीकरण करना चाहिए। उस समय जब युद्ध कार्रवाइयां नहीं रहती हैं, तब उनकी तैयारी के लिए इसी तरह विकेंद्रीकृत यूनिटों के रूप में रह कर काम करना चाहिए।

कॉरपेट सेक्युरिटी के बीच में तेजी से और गुप्त रूप से गतिविधियों को जारी रखने के लिए छोटी व विकेंद्रीकृत यूनिटों के रूप में ऑपरेट होना हालांकि अनुकूल विषय ही है, लेकिन उनके फायर पावर और कंबाट शक्ति कम होने की वजह से उन्हें धक्का पहुंचाने दुश्मन के लिए तुलनात्मक रूप से अनुकूलताएं बढ़ती हैं. इसलिए छोटी व विकेंद्रीकृत यूनिटों की अनुकूलताओं व प्रतिकूलताओं को ध्यान में रख कर काम करना चाहिए. विगत कुछ सालों से कारपेट सेक्युरिटी के क्षेत्रों में छोटे यूनिटों को जिन कारणों से धक्का लगा, उनकी समीक्षा करके, उन्हें रोकने के मकसद से हमारे कामकाज के तरीकों की रूपरेखा देनी चाहिए.

युद्ध में चाहे एक कर्वाइ हो, कॅपेइन हो या तो तमाम युद्ध ही क्यों न हो आत्मरक्षा—हमला, तिरोगमन—पुरोगमन, जीत—हार के क्रम से जारी रहते हैं. युद्ध की स्थिति में उत्पन्न बदलावों पर निर्भर होकर अगर युद्ध को आगे नहीं बढ़ाने की स्थिति उत्पन्न होती है, तिरोगमन दावपेंच पर अमल करते हैं. इसका लक्ष्य है कि हार को रोक कर, ताकतों को बचा कर फिर युद्ध को आगे बढ़ा कर जीत हासिल करना. जनयुद्ध में अंतिम जीत हासिल करने तक हमारे बलों की रक्षा और सैनिक सामग्री की रक्षा को महत्व देकर युद्ध को संचालित करते हैं. इसीलिए माओ ने कहा कि युद्ध में यथासंभव हमारे बलों को बचाना और जितनी संभव उतनी अधिक तादाद में दुश्मन बलों का उन्मूलन करना होगा, इस तरह युद्ध को संचालित करना ही सही युद्ध संचालन की पद्धति होगी.

जहां जनयुद्ध जारी है, उस क्षेत्र (युद्ध फ्रंट) से प्रधान बलों, पार्टी व मिलिटरी संबंधित प्रधान नेतृत्व और अत्यधिक बलों को रिट्रीट करने से वह रणनीतिक रिट्रीट (तिरोगमन) होगा. वैसे ही युद्ध फ्रंट से लंबे समय के लिए हमारे बलों को रिट्रीट करने से वह भी रणनीतिक रिट्रीट होगा.

एक युद्ध फ्रंट से प्रधान बलों को नहीं बल्कि अन्य बलों को पार्टी व पीएलजीए से संबंधित प्रधान नेतृत्व को नहीं बल्कि अन्य नेतृत्व ताकतों से कुछ लोगों को, अत्यधिक बलों को नहीं बल्कि कुछेक बलों को रिट्रीट करने से वह कार्यनीतिक रिट्रीट होगा. युद्ध क्षेत्र से सीजनल (मौसमी) हिसाब से हो या कुछ अवधि के लिए हो रिट्रीट करने से वह भी कार्यनीतिक रिट्रीट होगा.

इस सैद्धांतिक नियमों को ध्यान में रख कर डीके से ऐसी स्थिति में जब वहां कारपेट सेक्युरिटी का विस्तार और संगठनीकरण गुरिल्ला बेसों में भी हुआ और इस स्थिति में वह धक्का खाया गुरिल्ला जोन बन गया, कार्यनीतिक रिट्रीट के तहत कुछ बलों को अन्य क्षेत्रों में रिट्रीट करवाना चाहिए. केंद्रीय कमेटी द्वारा बनायी रणनीतिक योजना (2020) को ध्यान में रख कर, मध्य रीजियन में रहे डीके और उसके सीमावर्ती जोनों के बीच के अंतःसंबंधों को ध्यान में रख कर डीके से बलों को क्षेत्रों में रिट्रीट करवाना चाहिए. बीजे, पूबि—पूझा. क्षेत्रों से सीमित बलों को ही सहीमें रिट्रीट कराना चाहिए.

डीके से बलों को रिट्रीट कराने से वहां का आंदोलन उतना हद तक कमजोर होने की संभावना है। यह बात सच ही है। मगर बलों की रक्षा को महत्व देने के तहत उसके लिए तैयार होकर डीके आंदोलन को संचालित करना होगा। डीके से अन्य क्षेत्रों में बलों को रिट्रीट करने की स्थिति में यहां मौजूद बलों की तैनाती में (पार्टी कमेटीयों, डिविजनों व फार्मेशनों में) आवश्यक बदलाव करना होगा।

कारपेट सेक्युरिटी क्षेत्रों में गुरिल्ला युद्ध को जारी रखने के तहत जन मिलिशिया का निर्माण करके, पारंपरिक हथियारों से उसे लैस करते हुए, निरंतर राजनीतिक काम के जरिए उन्हें बेहतर तरीके से काम कराना होगा। प्रधान व द्वितीय बलों में से कुछ बलों को जन मिलिशिया में तैनात करके गुरिल्ला युद्ध को जारी रखना चाहिए। प्रधान व द्वितीय बलों के सहयोग से जन मिलिशिया को और जन मिलिशिया की बुनियाद पर निर्भर होकर प्रधान व द्वितीय बलों को समन्वय करके गुरिल्ला युद्ध को संचालित करना होगा।

बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों में दुश्मन द्वारा जारी निर्णायक युद्ध को विफल करने में उपयुक्त जन संघर्षों को तेज करेंगे और जन संगठनों व संयुक्त मोर्चे को मजबूत करेंगे।

क्रांति को सफल करने के लिए आरंभ से लेकर आखिरी तक पार्टी, जन सेना और संयुक्त मोर्चे को मजबूत करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। क्रांतिकारी आंदोलन के अस्थायी पीछेहट की स्थिति की वजह से वर्तमान में पार्टी, जनसेना व संयुक्त मोर्चा कमजोर स्थिति में हैं। इस स्थिति में पार्टी, जन सेना व संयुक्त मोर्चे का उन्मूलन करके क्रांतिकारी आंदोलन को खतम करने के मकसद से दुश्मन कगार हमले को जारी कर रहा है। इस हमले को विफल करके, हराने के मकसद से शहरी, मैदानी व वन क्षेत्रों में जनसंगठनों व संयुक्त मोर्चे को मजबूत करेंगे। जनसंगठनों व संयुक्त मोर्चे को मजबूत करने के लिए जन आंदोलनों—वर्ग संघर्ष को तेज करना चाहिए। जन आंदोलनों में भाग ले रहे युवती-युवकों को एक्टिविस्ट ग्रुपों में संगठित करना चाहिए। उनमें से पार्टी सदस्यों को तैयार करके पार्टी सेल्स को विस्तृत करना चाहिए। उनमें से पीआर कामरेडों को तैयार करना चाहिए। पीआर कामरेडों में से एसी सदस्यों को विकसित करना चाहिए। उनमें से कुछ लोगों को संयुक्त मोर्चे को चलाने वाले नेताओं के रूप में विकसित करना चाहिए। जन संगठनों में शामिल हो रहे लोगों में से उल्लेखनीय हिस्से को पीएलजीए में भर्ती करना चाहिए। जनसंगठनों की सदस्यता को बढ़ाना चाहिए। और कई खुले जनवादी संगठनों का गठन करना चाहिए, उनका विस्तार करना चाहिए। इन संघर्षों में शामिल लोगों में से पार्टी कार्यकर्ताओं को तैयार करके शहरी व मैदानी क्षेत्रों को ऑर्गनाइज करना चाहिए।

वर्तमान में देशभर में खुले व कानूनी संघर्षों व निर्माणों द्वारा जारी जन आंदोलनों में, जन संगठनों में, संयुक्त मोर्चा के निर्माणों में राजनीतिक व सांगठनिक रूप में उत्पन्न गलत रुझानों को सुधारना चाहिए। खुले व कानूनी जन संगठनों व

जन आंदोलनों को और विस्तृत व संगठित करके समरशील ताकत के रूप में विकसित करना चाहिए.

इन आंदोलनों व संगठनों में से पुरोगामी, क्रियाशील व समरशील ताकतों से पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे को संगठित (कन्सालिडेट) करना चाहिए. खुले जन संगठनों द्वारा जारी जन आंदोलनों को पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे के संगठनीकरण के लिए अच्छे स्रोत के रूप में इस्तेमाल करने में जारी कमजोरियों, सीमितताओं को पार करने के लिए यह सबक लेना चाहिए कि जब वो आंदोलन जारी रहते हैं, उस वक्त सिर्फ उस काम के लिए आवंटित कुछ ही कामरेडों को नहीं बल्कि सभी स्तरों की पार्टी कमेटियों में से अत्यधिक कामरेडों को इस संगठनीकरण कैंपेइन में भाग लेना चाहिए. कारपेट सेक्युरिटी के बीच में एक ओर खुले संगठनों का निर्माण करते हुए ही दूसरी ओर गुप्त रूप से काम करते हुए स्थानीय स्तर के वर्ग संघर्ष में जनता का नेतृत्व करने वाले गुप्त जन संगठनों को सक्रिय रूप से काम कराना चाहिए. शहरों व मैदानों में भी खुले संगठनों के साथ-साथ गुप्त रूप जन संगठनों का निर्माण करके सक्रिय रूप से काम कराना चाहिए.

कारपेट सेक्युरिटी संगठित होने की स्थिति में स्पेशल जोन स्तर/स्पेशल एरिया स्तर के ऐसे जन संगठनों की कमेटियों को जिन्हें समन्वय के साथ संचालित करना संभव नहीं है, रद्द करके मुख्य रूप से ग्राम व एरिया स्तरीय जन संगठनों को जहां संभव है वहां डिविजनल जन संगठनों की कमेटियों को सक्रिय रूप से काम कराना चाहिए.

रणनीतिक संयुक्त मोर्चे के रूप में अस्तित्व में आयी क्रांतिकारी जन कमेटियां (आरपीसी) वर्तमान में डीके को छोड़ कर और कहीं काम नहीं कर रही हैं. डीके में भी गुरिल्ला बेसों में कारपेट सेक्युरिटी का विस्तार होने की वजह से वो कमजोर हो गई हैं. इस स्थिति में जनताना सरकारों को संगठित करते हुए गुप्त रूप से काम कराना है. हालांकि विगत की तरह जन राज्य सत्ता को संचालित करने की स्थिति में डिविजनल जनताना सरकारें नहीं हैं, लेकिन दुश्मन वर्गों के खिलाफ क्रांतिकारी जनता को एकताबद्ध रूप से आगे बढ़ाने के लिए, जब का तब जनता के सामने राजनीतिक कार्यक्रम रखने के लिए उन्हें चलाने की आवश्यकता है. ध्वस्त हुई जन राज्यसत्ता के पुनरनिर्माण के लिए जनता को चेतनाबद्ध करने वाले, संगठित करने वाले प्रयास के जरिए ही 'नीवद नेल्लता नार' जैसे शासक वर्गों के प्रतिक्रांतिकारी कार्यक्रम को विफल कर सकेंगे.

केंद्रीय पीओआर (2020) के मार्गदर्शन के मुताबिक — देशभर में धाक्क खा रहे/धक्का खाये जन संगठनों का पुनर निर्माण करना चाहिए. धक्का खाये जनाधार को फिर मजबूत करना चाहिए.

देशभर में आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं पर जन संघर्षों में शामिल हो रही जनता को वर्ग व सेक्शनल संगठनों में संगठित करना चाहिए. उन्हें

साम्राज्यवादी, सीबीबी, सामंतवादी विरोधी वर्ग संघर्षों की राजनीति से चेतनाबद्ध करते हुए समरशील संघर्षों के रूप में विकसित करते हुए सशस्त्र संघर्ष के स्तर पर विकसित करना चाहिए। उन पर निर्भर होकर विशाल मैदानी क्षेत्रों में व शहरों में पार्टी को विकसित करना चाहिए।

स्थानीय स्तर से लेकर केंद्रीय स्तर तक मध्यस्थ सेक्शनों को हमारी ओर खड़ा करना चाहिए। प्रधान दुश्मन को अलग-थलग करते हुए, क्रांतिकारी आंदोलन के पुरोगमन के लिए उपयुक्त होने लायक दुश्मन के बीच के अंतरविरोधों का इस्तेमाल करना चाहिए, मित्र शक्तियों को हमारी ओर खड़ा करना चाहिए। इस समझदारी से विभिन्न समस्याओं पर विभिन्न रूपों में कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चे के मंचों का निर्माण करना चाहिए।

देश के सभी आदिवासी क्षेत्रों में आदिवासी जनवादी स्वायत्तता के लिए व्यापक जन आंदोलनों को निर्मित करना चाहिए। इसके तहत आंदोलन की ताकत और कमजोरी पर आधार होकर 5वीं अनुसूची, ग्रामसभा व 6वीं अनुसूची के लिए संघर्षों का निर्माण करना चाहिए। 'भारत देश में राष्ट्रीयताओं का सवाल—हमारा दृष्टिकोण' दस्तावेज के मार्गदर्शन में राज्य कमेटियों को फौरन इस समस्या पर राजनीतिक कार्यक्रम की रूपरेखा बना कर आवश्यक निर्माणों का गठन करना चाहिए।

उन राज्यों, जहां पार्टी यूनिट मौजूद हैं, में वर्ग संघर्ष को तेज करने के तहत राजनीतिक समस्याओं पर केंद्रीकरण करते हुए जनता को वर्ग संघर्ष में गोलबंद करना चाहिए।

जन संगठनों को सक्रिय रूप से काम कराने के लिए उनमें पार्टी फ्रैक्शनों का गठन करना चाहिए। जन संघर्षों में एकजुट होने वालों के साथ एक्टिविस्ट ग्रुपों का गठन करना चाहिए। उन्हें पार्टी सदस्यों के रूप में विकसित करके, उन पर आधार होकर पार्टी सेल्स, पीआर और पार्टी कमेटियों का निर्माण करना चाहिए। जन संघर्षों व जन संगठनों को सही तरीके से संचालित करने के लिए पार्टी व्यवस्था का अवश्य निर्माण करना चाहिए। जन संघर्ष और जन संगठन हमारी मौलिक लाइन के मुताबिक काम करें, इसके लिए सैद्धांतिक, राजनीतिक व सांगठनिक रूप से उनमें उत्पन्न गलत रुझानों के खिलाफ जब का तब एजुकेशन पहुंचाना चाहिए। हमारे क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में जहां यह प्रयास सही समय पर किया गया, वहां क्रांतिकारी आंदोलन के पुरोगमन के लिए उपयुक्त हुआ। जहां ऐसा नहीं किया गया, नकारात्मक नतीजें आए थे। विगत कुछ सालों से जन संगठनों में सैद्धांतिक व राजनीतिक रूप से पोस्ट माडर्निस्ट व आंबेडकरिस्ट रुझानों का प्रभाव और स्त्री-पुरुष संबंधों में गलत सैद्धांतिक प्रभाव जारी है। इन्हें सुधारना चाहिए।

प्रिय कामरेड्स,

केंद्रीय पीओआर (2020) द्वारा निर्देशित फौरी कार्यभारों की पूर्ति के मकसद से विगत साढ़े तीन सालों से पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मार्चे द्वारा किए गए

राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक प्रयास की समीक्षा करके हमने वर्तमान आंदोलन की स्थिति का आकलन किया। दुश्मन द्वारा जारी निर्णायक युद्ध के चलते और लंबे समय से पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे में मौजूद गलत रुझानों/गैर सर्वहारा रुझानों को नहीं सुधारने के चलते क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी पीछेहट की स्थिति से ही गुजर रहा है। डीके, बीजे, पूबि-पूझा, गुरिल्ला जोन धक्का खाए गुरिल्ला जोनों में तब्दील हुए। अन्य आंदोलन के क्षेत्रों में पुरोगति नहीं होने के चलते लाल प्रतिरोध क्षेत्र के रूप में ही जारी है। 2 यू व उत्तर छत्तीसगढ़ क्षेत्र पूरी तरह श्वेत क्षेत्रों में तब्दील हो गए। बाकी लाल प्रतिरोध क्षेत्रों के कुछ हिस्से और डीके, बीजे, पूबि-पूझा, में से कुछ हिस्से पूरी तरह दुश्मन के नियंत्रण में जाकर श्वेत क्षेत्रों में तब्दील हो गए। ऐसी स्थिति में हमारे फौरी, प्रधान व केंद्रीय कार्यभार को इस तरह बदल रहे हैं – “पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चे व क्रांतिकारी आंदोलन को बचाएंगे। डीके, बीजे, पूबि-पूझा, में ध्वस्त हुए गुरिल्ला जोनों का पुनरनिर्माण करेंगे। देशभर में शहरी, मैदानी व वन क्षेत्रों में हमारी ताकत के अनुसार लगातार जनाधार को बढ़ाते हुए, आत्मगत ताकतों को विकसित करते हुए वर्ग संघर्ष, लालप्रतिरोध क्षेत्रों व गुरिल्ला युद्ध को विकसित करेंगे। देशभर में आंशिक समस्याओं व राजनीतिक समस्याओं पर स्वतःस्फूर्तता से जारी जन आंदोलनों को संगठित आंदोलनों के रूप में विकसित करेंगे।” इस कार्यभार के मुताबिक जारी हमारा प्रयास आधार इलाके के लक्ष्य के लिए मददगार होना चाहिए।

इस केंद्रीय कार्यभार के साथ-साथ 2020 की सीसी पीओआर द्वारा निर्देशित फौरी राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक, संयुक्त मोर्चा और शहरी कार्यभारों में आवश्यक बदलाव करके उन्हें हासिल करने के लिए प्रयास करेंगे।

इन कार्यभारों पर सटीक और सक्षम रूप से अमल करने के लिए पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे में जारी गैर सर्वहारा रुझानों को सुधारना चाहिए। लंबे समय से क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा सामना की जा रही सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक समस्याओं का इसमें हमने उल्लेखन किया। इन समस्याओं की प्रधान जिम्मेदारी केंद्रीय व राज्य कमेटियों जो रणनीतिक नेतृत्वकारी कमेटियां हैं, की है। हमारी पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे में अनुभववादी मनोगतवाद और कठमुल्लावादी मनोगतवाद के रूप में मनोगतवाद जारी है। इसका पीछा करते हुए हमारे व्यवहार में गलतियां/खामियां, कमजोरियां व रुझान जारी हैं। पार्टी में सर्वहारा वर्ग के क्रांतिकारी सोच/विचारधारा और बुर्जुआ, पेटी बुर्जुआ व किसान वर्गीय सोच/विचारधारा के बीच में निरंतर संघर्ष जारी रहता है। बैठकों की चर्चाओं व व्यवहार में उनके बीच में निरंतर संघर्ष जारी रहता है। ये धीरे-धीरे रुझान बनते हैं। और संगठित होने से लाइनों के रूपों में विकसित होते हैं। वर्तमान में हमारे क्रांतिकारी आंदोलन और पार्टी में गलत रुझान हैं, लेकिन गलत लाइनें नहीं हैं। इसीलिए हमारी पार्टी ने एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित कार्यभारों को पूरा करने में अड़चन बने गैरसर्वहारा रुझानों को सुधारने का अभियान (भूलसुधार अभियान)

संचालित किया। उसके महत्व को पहचान करके गैर सर्वहारा रुझानों को सुधारने में विफल होने के कारण ही देशव्यापी क्रांतिकारी आंदोलन तीव्र रूप से नुकसान होकर 2012 तक कठिन स्थिति में पहुंच गया। इसकी समीक्षा करने वाली सीसी ने 2013 में बोल्शेवीकरण अभियान लिया। इससे कुछ क्षेत्रों में कुछ नतीजें हासिल किए। इस कैंपेइन को बनाए नहीं रखने की वजह से देशभर के क्रांतिकारी आंदोलन, पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे में और एक बार गलत रुझान मजबूत हो गए। इसीलिए देशभर के क्रांतिकारी आंदोलन के कठिन स्थिति और अस्थायी पीछेहट की स्थिति में पहुंचने के पीछे के मुख्य कारणों में से एक गैर सर्वहारा विचार/विचारधारा, रुझान और गलत व्यवहार को नहीं सुधारने से क्रांति के लिए अनुकूल बन रही भौतिक परिस्थिति का सही इस्तेमाल नहीं कर सकते हैं। दुश्मन के हमलों से हो रहे नुकसानों को नहीं रोक सकते हैं। पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा और क्रांतिकारी आंदोलन को बचाने के लिए इन गलत रुझानों के खिलाफ भूलसुधार अभियान को संचालित करेंगे। गैर सर्वहारा रुझानों को सुधारने का मतलब है उनका कारण बनी विचारधारा को बदलना और उससे उत्पन्न गलत कार्यशैली को सुधारना। लेकिन विगत कैंपेइनों में गलत विचारधारा और गलत कार्यशैली को बदलने पर केंद्रीकरण नहीं किए जाने के चलते आशानुरूप नतीजें हासिल नहीं कर पाए। उससे सबक लेकर इस बार भूल सुधार अभियान को सफल बनाएंगे। देशभर में पार्टी, पीएलजीए और संयुक्त मोर्चे का पुनरनिर्माण करेंगे। शहरी व मैदानी आंदोलनों का पुनरनिर्माण करेंगे। मजबूत जनाधार को विकसित करेंगे। वर्ग संघर्ष को तेज करते हुए, उसमें से पुरोगामी, सक्रिय व समरशील ताकतों पर आधार होकर पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे को मजबूत करेंगे। दुश्मन के प्रतिक्रांतिकारी हमलों के बीच में यह प्रयास करके सही नतीजें हासिल करने के लिए तुलनात्मक रूप से अधिक वक्त ही लग सकता है। देशभर के क्रांतिकारी आंदोलन के अस्थायी पीछेहट की स्थिति में, प्रतिकूलताएं और बढ़ने की स्थिति में, इस स्थिति को पार करने के लिए जनता में राजनीतिक प्रयास को प्रधान महत्व देते हुए, तुलनात्मक रूप से लंबे समय तक खुले व कानूनी संघर्ष और निर्माण रूपों का इस्तेमाल करते हुए क्रांतिकारी आंदोलन को संचालित करना होगा। पार्टी गुप्त रूप से रहते हुए ही यह काम करने में पकड़ हासिल करना चाहिए। इस प्रयास के जरिए ही पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चा और क्रांतिकारी आंदोलन अजेय शक्ति के रूप में खड़े होंगे।

अस्थायी पीछेहट से गुजरने वाला आंदोलन और प्रतिकूलताओं में धकेल न जाए व और धक्का न खा जाए, इसके लिए पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चे और क्रांतिकारी आंदोलन को बचाने का निर्णय लिया गया। इसके लिए आज की स्थिति में हमारा राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक प्रयास, हमारे कार्याचरण की दिशा, हमारी कार्यशैली कैसी होनी चाहिए, यह और एक बार संक्षिप्त रूप में बताएंगे।

जब आंदोलन अस्थायी पीछेहट की स्थिति का शिकार होते हैं, जनता में से

मध्यस्थ व पिछड़े लोग गैर कानूनी गतिविधियों में शामिल होने के लिए आगे-पीछे होते हैं। वर्ग संघर्ष में और गुरिल्ला युद्ध में उनकी जुझारू भागीदारी तुलनात्मक रूप से घट जाती है। जन दुश्मन और लुटेरे लोग जनता का तीव्र शोषण और उत्पीड़न करते हैं। सरकार के सहारे (वर्तमान में कारपेट सेक्युरिटी के सहारे) तुलनात्मक रूप से बड़ी तादाद में मुखबिर न सिर्फ तैयार होते हैं, बल्कि काउंटर गुरिल्ला ऑपरेशनों में उनकी भागीदारी बढ़ती है। इसलिए दुश्मन के सशस्त्र बलों द्वारा किए जाने वाले काउंटर गुरिल्ला ऑपरेशनों में पार्टी व पीएलजीए के बलों को नुकसान होने की संभावनाएं तुलनात्मक रूप से बढ़ती हैं। जनाधार घटने की वजह से आर्थिक स्रोत व युद्ध स्रोत घटते हैं। पार्टी व पीएलजीए में रिक्रूटमेंट घटता है। इन सभी कारणों की वजह से गुरिल्ला युद्ध की तीव्रता तुलनात्मक रूप से कम होती है। इन्हें ध्यान में रख कर इस स्थिति को बदलने के लिए इस तमाम इस काल में, आत्मगत बलों और नेतृत्व ताकतों की रक्षा को महत्व देना चाहिए। पार्टी गुप्त रूप में रहते हुए ही खुले-कानूनी संघर्ष व निर्माण रूपों को महत्व देते हुए काम करना चाहिए। छोटी-विकेंद्रीकृत कार्रवाइयों द्वारा शक्ति के अनुसार गुरिल्ला युद्ध को जारी रखना चाहिए। इस तमाम अवधि में चाहे मास वर्क के यूनिट हो या कंबाट यूनिट, ऑपरेशनल यूनिटों के रूप में छोटे फार्मेशनों (टीमों या सेक्शनों) में रहना चाहिए। पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे को सैद्धांतिक, राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक रूप से संगठित करने वाले काम को महत्व देना चाहिए, उच्च स्तरीय निर्माणों को नहीं करना चाहिए। जैसा कि अनुकूल परिस्थितियों में करते हैं, अब एक ही समय में कई काम नहीं कर सकते हैं। इसलिए पार्टी व पीएलजीए के हर यूनिट और हर नेतृत्वकारी कामरेड को महत्वपूर्ण काम ही करना चाहिए। नेतृत्व सहित पार्टी व पीएलजीए के सभी यूनिटों को हर रोज चलन (मूविंग) में रहना चाहिए। कैंपिंग पद्धति को छोड़ना चाहिए, स्थान बदलने की पद्धति पर अमल करना चाहिए। हमारे सभी कामों में गुप्तता का पालन करना चाहिए, खुले कामकाज तरीकों को छोड़ना चाहिए। साम्राज्यवादी, सीबीबी व सामंतवादी वर्गों के शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ वर्ग संघर्ष को तेज करने की आवश्यकता को समझाते हुए जनता को राजनीतिक रूप से जागरूक करने के लिए राजनीतिक प्रयास को तीव्र रूप देना होगा। लुटेरे वर्गों के खिलाफ राजनीतिक हमले (पोलिटिकल अफेंस) को जारी रखना चाहिए।

हमारा अनुरोध है कि पीबी/सीसी द्वारा जारी इस सर्कुलर के आधार पर पार्टी यूनिट रहने वाले हर क्षेत्र में राज्य स्तर, जिले स्तर व एरिया स्तर में आंदोलन की स्थिति का आकलन करके वस्तुगत स्थिति और आत्मगत स्थिति में अनुकूलताओं व प्रतिकूलताओं का आकलन करके फौरी कार्यभारों को और उन कार्यभारों को पूरा करने के लिए आवश्यक दावपेंचों को बना कर माओवादी कार्यशैली के साथ काम करें। अनुभवों और विफलताओं से सीख लेते हुए धीरता व सहनशीलता के साथ जनता में राजनीतिक, सांगठनिक प्रयास करने के जरिए हम इस स्थिति को बदल सकेंगे।

बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों, रणनीतिक क्षेत्रों के स्वभाव में हो रहे बदलावों को शहरों, मैदानों, वन क्षेत्रों में प्रतिघातुकता का संगठनीकरण होने की स्थिति को, आंदोलनरत क्षेत्रों में कारपेट सेक्युरिटी का संगठनीकरण होने की स्थिति को और नगरीकरण (अर्बनाइजेशन) बढ़ने की स्थिति को ध्यान में रख कर रणनीतिक दृष्टिकोण के साथ क्रांतिकारी आंदोलन को बचाने और विकसित करने के कार्यभारों को पूरा करने के लिए संकल्प लेंगे.

2018 से जारी क्रांतिकारी आंदोलन के अस्थायी पीछेहट की स्थिति और अधिक प्रतिकूलता का रूप लेने की स्थिति में जब हम फौरी कार्यभारों को बदल रहे हैं, तब एक तबके में निराशा उत्पन्न हो सकती है. इस स्थिति को पार करने के प्रयास में आत्मविश्वास का अभाव हो सकता है. हालांकि हम जो मार्क्सवादी हैं जब भी एक एंटीटी या क्रम का परिशीलन करते हैं, उनमें मौजूद अंतरविरोधों, अनुकूलताओं व प्रतिकूलताओं, उनकी तत्कालीन स्थिति और भविष्य के बदलावों को ध्यान में रखते हैं. तब वास्तविक स्थिति पर स्पष्टता, उसके बदलाव और बदलने के क्रम के प्रति आत्मविश्वास बढ़ता है. क्रांति को संचालित करने के क्रम में हम वस्तुगत और आत्मगत स्थिति में मौजूद अनुकूलताओं व प्रतिकूलताओं दोनों का विश्लेषण करके प्रतिकूलताओं को पार करते हुए अनुकूलताओं पर आधार होकर आगे बढ़ने की योजना बनाते हैं. तभी हम एकपक्षता या अल्पदृष्टि का शिकार नहीं होंगे. उस दृष्टिकोण से मौजूदा वस्तुगत और आत्मगत स्थिति को देखेंगे.

दुनिया और देश में तेज होते मौलिक अंतर विरोधों की पृष्ठभूमि में दुनियाभर में और देश में लुटेरे वर्गों के खिलाफ जनता संघर्ष कर रही है. क्रांति के लिए यह अनुकूल परिस्थिति अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार करके आगे बढ़ने के लिए आधार और स्रोत होगी. विगत एक दशक से कठिन परिस्थिति और अस्थायी पीछेहट की स्थिति को पार करने के लिए किए गए वर्ग संघर्ष—गुरिल्ला युद्ध में विभिन्न स्तरों के एक तबके की आत्मगत ताकतें मजबूत हो गईं, अभी भी देशभर में हजारों पार्टी कतारें, पीएलजीए योद्धा, जन संगठन के कार्यकर्ता मौजूद हैं. आज की स्थिति को पार करने के लिए यह आत्मगत पहलू (सब्जेक्टिव फैक्टर) आधार और स्रोत होगा. इस आधार और स्रोत पर निर्भर होकर सभी क्षेत्रों में, सभी स्तरों में दूसरी श्रेणी के नेतृत्व को विकसित करेंगे. इस वस्तुगत व आत्मगत अनुकूलताओं पर आधार होकर क्रांतिकारी आंदोलन को दुश्मन के हमले से बचा कर आगे बढ़ेंगे.

अगस्त 2024

**पोलित ब्यूरो,
भाकपा (माओवादी)**

★ ★ ★